A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 17 मई, 2026

सुबह सवेरे

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 254, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

विरासत : दतिया पैलेस

फोटो : राजेंद्र जांगले

हालात नहीं बदले तो गरीबी के दलदल में फंसेंगे

● मोदी बोले- ये दुनिया के लिए आपदाओं का दशक

कहा- पहले कोरोना, फिर युद्ध और अब ऊर्जा संकट पैदा कर रहा मुश्किल

द हेग (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नीदरलैंड दौरे पर हैं। उन्होंने ने द हेग में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए दुनिया के मौजूदा हालात पर चिंता जताई। मोदी ने कहा कि आज मानवता के सामने अनेक बड़ी चुनौतियां हैं। पहले कोरोना, फिर युद्ध और अब ऊर्जा संकट से जूझ रही है। ये दशक दुनिया के लिए आपदाओं का दशक बन गया है। अगर हालात नहीं बदले तो बीते अनेक दशकों के काम पर पानी फिर जाएगा। दुनिया की बहुत बड़ी आबादी गरीबी के दलदल में फंस जाएगी। भारत एआई और सेमीकंडक्टर सेक्टर में तेजी से आगे बढ़ रहा है। देश में 12 सेमीकंडक्टर प्लांट्स पर काम चल रहा है, जिनमें से 2 में प्रोडक्शन शुरू हो चुका है। 16 मई 2014 को दशकों बाद भारत में पूर्ण बहुमत वाली स्थिर सरकार बनी थी। उन्होंने कहा कि करोड़ों भारतीयों का भरोसा उन्हें न रुकने देता है और न थकने देता है।

● 2025 में करीब 44 करोड़ हजार नए स्टार्टअप स्टाट हुए हैं– मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि 2025 में भारत में करीब 44 करोड़ हजार नए स्टार्टअप स्टाट हुए हैं। पिछले साल भारत में 1.25 लाख से ज्यादा पेटेंट फाइल हुए। भारत चिप मेकिंग में सेमीकंडक्टर में भी बड़े कदम उठा रहा है। सेमीकंडक्टर प्लांट पर काम चल रहा है। इनमें से 2 में प्रोडक्शन शुरू हो चुका है। अब चिप भी डिजाइन इन इंडिया, मेड इन इंडिया होगी। भारत की ये जर्नी हमारे लोकतंत्र को मजबूत बना रही है। जब लोगों के सपने सच होते हैं तो लोकतंत्र पर उनका भरोसा बढ़ता है।

यूरोप में भारत की एंट्री का गेटवे बनेगा नीदरलैंड

भारतीय बिजनेस के लिए नीदरलैंड यूरोप में एंट्री का नैचुरल गेटवे बनेगा। उन्होंने प्रवासी भारतीयों को दोनों देशों के बीच भरोसेमंद ब्रिज बताया। हालात नहीं बदले तो दुनिया की बड़ी आबादी गरीबी की ओर जा सकती है। उन्होंने कोरोना, युद्ध और एनर्जी क्राइसिस पर चिंताई जताई। भारत अब दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप इकोसिस्टम है।

हनुमान-चालीसा का पाठ मां वाग्देवी की हुई पूजा

● हाईकोर्ट के फैसले के बाद भोजशाला में जुटे श्रद्धालु

श्रद्धालु बोले- सालों बाद बिना रोक-टोक दर्शन हो रहे

धार (नप्र)। मध्य प्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने धार स्थित विवादित भोजशाला-कमाल मौला परिसर को राजा भोज के समय का वाग्देवी (देवी सरस्वती) का मंदिर माना है। कोर्ट ने हिंदू पक्ष को यहां पूजा का अधिकार दे दिया है। फैसले के बाद शनिवार सुबह श्रद्धालुओं और अलग-अलग समितियों के पदाधिकारियों ने शांतिपूर्ण माहौल में भोजशाला पहुंचकर दर्शन और पूजा-अर्चना की। लोगों ने हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने बताया कि हाईकोर्ट ने 7 अप्रैल 2003 के आदेश को आंशिक रूप से निरस्त कर दिया है।

सुप्रीम कोर्ट में 2 कैविएट याचिकाएं दायर

मुस्लिम पक्ष के सुप्रीम कोर्ट जाने की संभावना को देखते हुए हिंदू पक्ष ने सर्वोच्च न्यायालय में 2 कैविएट याचिकाएं दायर की हैं। हिंदू पक्ष के वकील विष्णु शंकर जैन ने बताया कि हाईकोर्ट ने लंदन के एक संग्रहालय में रखी वाग्देवी की मूल मूर्ति वापस लाने की मांग पर भी विचार किया है। शनिवार को धार पुलिस और रैपिड ऐक्शन फोर्स द्वारा शहर के विभिन्न क्षेत्रों में फ्लैग मार्च किया गया। मार्च प्रमुख मार्गों से होकर गुजरा।

नीट पेपर लीक केस: 9वीं गिरफ्तारी, पुणे की टीचर गिरफ्तार

एनटीए ने एक्सपर्ट तैनात किया था, छात्रों को बॉटनी-जूलॉजी के कई सवाल बताए

नई दिल्ली (एजेंसी)। नीट पेपर लीक मामले में पुणे से एक और टीचर को गिरफ्तार किया है। आरोपी की पहचान सीनियर बॉटनी टीचर मनिषा गुरुनाथ मांधरे के रूप में की गई है। आरोप है कि उसने परीक्षा से पहले छात्रों को बॉटनी और जूलॉजी के कई सवाल बताए थे। छात्रों को बताए गए अधिकांश सवाल 3 मई 2026 को आयोजित नीट परीक्षा के असली प्रश्नपत्र में थे। सीबीआई के मुताबिक मनिषा गुरुनाथ मांधरे को एनटीए ने नीट परीक्षा में एक्सपर्ट के तौर पर नियुक्त किया था। उसके पास बॉटनी और जूलॉजी के प्रश्नपत्रों तक पूरी पहुंच थी। जांच एजेंसी के अनुसार अप्रैल 2026 में आरोपी टीचर ने पुणे की ही रहने वाली मनिषा वाघमारे के जरिए नीट अभ्यर्थियों को जुटाया।

सुप्रभात

आज से पहले बीते
जितने भी कल थे
वे सारे मेरा बचपन है

सारे फैसले जो मैंने
पिछले दिनों लिए
सारे रिश्ते जो मैंने
पिछले दिनों निभाए
सारी मशक्कत,
वो सारी क्रियाएं जो
कल मेरे द्वार की गई
वे सारी
मेरे बचपन की क्रियाएं है

मैं बचपन को किसी अवधि में
समा नहीं पाती

मैं आज क्या हूँ
मैं नहीं जानती
मगर मैं कल एक बच्ची ही थी

अपने जीवन के
अंतिम दिन का
गुज़रा कल भी,
मेरा बचपन ही होगा
पिछले दिनों में
मैं कमतर ज्ञानी
कमतर समझदार
ज़्यादा मासूम रही
और कभी-कभी
ज़्यादा बचकानी भी

हो सकता है
भविष्य में
मेरे सर की चांदी देख कर
या गाल के दर्रे देख कर
आप मुझ पर हंसे
मगर मैं तब भी
अपने अभी-अभी
गुज़रे कल को
बचपन ही कहूंगी।

– वैशाली थापा

मप्र हाईकोर्ट का नया पोर्टल लोकार्पित, एम्पावरिंग जस्टिस वाया-यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफार्म इंटीग्रेशन कार्यक्रम का किया शुभारंभ

न्यायपालिका को अस्पतालों की तरह 24X7 कार्य करना होगा: न्यायाधीश श्री सूर्यकांत

न्याय व्यवस्था के डिजिटली सशक्त होने से आम नागरिकों को मिलेगा त्वरित न्याय : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने कहा है कि अमरकंटक से निकलने वाली मां नर्मदा, छोटी-छोटी नदियों के मिलने से विशाल स्वरूप प्राप्त करती है। इसी प्रकार नई तकनीक की धाराओं के माध्यम से कोर्ट, पुलिस, प्रिजन, फॉरेंसिक और मेडिको लीगल की शाखाएं यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफॉर्म में एकाकार होते हुए न्याय पाने में आमजन के लिए सहायक सिद्ध होंगी। आम नागरिक को त्वरित रूप से न्याय देने के लिये न्यायपालिका को अस्पतालों की तरह 24ङ्ग7 कार्य करना होगा। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय द्वारा नागरिकों के लिए डिजिटल सेवाओं का विकास कर न्याय प्रक्रिया को तेज और सरल बनाना सराहनीय और अनुकरणीय है। उच्च न्यायालय के डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से समय पर बंदियों को मुक्त करने, अर्जेंट हियरिंग, कोर्ट ऑर्डर के डिजिटलीकरण जैसी अनेक सुविधाएं मिलेंगी। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह व्यवस्था देश के सभी न्यायालयों में लागू की जाए। भारत के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत जबलपुर में आयोजित फ्रेगमेंटेशन ऑफ फ्यूजन- एम्पावरिंग जस्टिस वाया-यूनाइटेड डिजिटल प्लेटफार्म इंटीग्रेशन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। न्यायमूर्ति श्री सूर्यकांत ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री संजीव सचदेवा के साथ दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश तथा मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन कानूनविद एवं न्यायविद उपस्थित थे।

मध्यप्रदेश पुलिस के सहयोग से वॉर्ड स्तर पर स्थापित संकेत समाधान मध्यस्थता केंद्रों का हुआ शुभारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. यादव की उपस्थिति में वंदे मातरम और जन गण मन के साथ कार्यक्रम आरंभ हुआ। पुष्पगुच्छ और प्रतीक चिन्ह भेंट कर अतिथियों का स्वागत किया गया। इस अवसर पर हाईकोर्ट के डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की लॉन्चिंग की गई। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने लाइव वीडियो स्ट्रीमिंग के लिए अपना नया [illegible] (कोर्टरूम लाइव ऑडियो–विजुअल स्ट्रीमिंग सिस्टम) लॉन्च किया। यह एक ओटीटी स्टाइल में तैयार किया गया डिजिटल सिस्टम है, जिससे थर्ड पार्टी सिस्टम पर निर्भरता खत्म होगी और लाइव स्ट्रीमिंग का पूरा कंट्रोल हाईकोर्ट अथॉरिटी के पास होगा। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट का नया पोर्टल भी लॉन्च किया गया। यहां जज, वकील और फरियादियों के लिए कोर्ट के ऑर्डर, बेल एप्लिकेशन सहित अन्य जरूरी दस्तावेज आसानी से उपलब्ध होंगे। यह फ्यूचर रेडी ज्यूडिशियल सिस्टम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट ने डिजिटल डेटा मैनेजमेंट सिस्टम 'प्रथम' भी लॉन्च किया है। यह सिस्टम आर्टिफीशियल इंटेलिजेंस से लैस है। यह पारदर्शिता और प्रक्रियाओं को सरल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल है। इस अवसर पर हाईकोर्ट की डिजिटल क्रांति के अंतर्गत कॉपीइंग ऑटोमेशन एंड ज्यूडीशियल इन्फॉर्मेशन डिसएमीनेशन सिस्टम की शुरुआत भी की गई। इससे फरियादियों, वकीलों और जजों को आसानी से ऑडर्स की प्रमाणित प्रतियां मिल सकेंगी। इसके साथ ही प्रिजनर रिलीज के लिए ऑनलाइन क्रिमिनल जस्टिस सिस्टम की शुरुआत की गई।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25°c
न्यूनतम 22°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 17 मई 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

हो जाइए तैयार ! भीषण गर्मी-सूखा पड़ने की आशंका

● सुपर अल नीनो मई-जुलाई में ऐक्टिव होने, सर्दी तक रहने की संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में इस साल सामान्य से कम बारिश के अनुमान के बीच सुपर अल-नीनो भी एक्टिव हो सकता है। अमेरिकी मौसम एजेंसी 'नेशनल ओशेनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन' (नोआ) के अनुसार यह मई-जुलाई के दौरान ही दस्तक दे सकता है।

नोआ ने बताया कि प्रशांत महासागर का तापमान इस बार मई में सामान्य से 0.5 डिग्री सेल्सियस ज्यादा है। यह गर्मी की स्थिति इस बार पूरे मानसून सीजन के दौरान बनी रह सकती है।

● **अलनीनो ने बढ़ाई भारतीय मौसम विभाग की चिंता–** भारतीय मौसम विज्ञान विभाग ने केरल में दक्षिण-पश्चिम मानसून के 26 मई, 2026 के आसपास जल्दी आगमन का आधिकारिक पूर्वानुमान लगाया है। यह सामान्य आगमन तिथि 1 जून से पहले है और 2025 सहित हाल के समय में मानसून के जल्दी आगमन की प्रवृत्ति को जारी रखता है। हालांकि, अमेरिकी राष्ट्रीय महासागरीय और वायुमंडलीय प्रशासन के नवीनतम ईएनएसओ पूर्वानुमान के अनुसार, अलनीनो के जल्द ही विकसित होने और 2026-27 की उत्तरी गोलार्ध की सर्दियों तक जारी रहने की संभावना है। एक मौसम एक्सपर्ट और क्लाइमेट इमरजेंसी इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर पीटर डी कार्टर ने कहा है कि ग्लोबल वॉर्मिंग की वजह से धरती का तापमान 2024 के रिकॉर्ड को छूने के बेहद करीब है।

● **अलनीनो के बारे में नए पूर्वानुमान ने डराया–** 14 मई को प्रकाशित एक नए पूर्वानुमान में, एजेंसी का अनुमान है कि आगामी अलनीनो के अक्टूबर से शुरू होने पर मजबूत या बहुत मजबूत श्रेणी में आने की 65 फीसदी संभावना है, जो इसे रिकॉर्ड किए गए इतिहास में सबसे मजबूत अलनीनो में से एक बना सकता है। अक्टूबर से फरवरी की अवधि के लिए अत्यंत शक्तिशाली अलनीनो यानी समुद्र की सतह के तापमान में 3.6 डिग्री फारेनहाइट (2 डिग्री सेल्सियस) की बढ़ोतरी, जिसे अनौपचारिक रूप से सुपर अलनीनो कहा जाता है। कुछ एक्सपर्ट तो इसे राक्षस तक कहते हैं। अब इस बात की भी 82 फीसदी संभावना है कि अलनीनो अब से जुलाई के बीच आ जाएगा और फरवरी 2027 तक जारी रहेगा।

सुपर अलनीनो पूरी दुनिया में मचाएगा तबाही

अलनीनो की घटनाएं हर दो से सात वर्षों में होती हैं, जब उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में हवा और समुद्री धाराओं के पैटर्न में बदलाव के कारण समुद्र की सतह का तापमान ऐतिहासिक औसत से 0.9 फ़ारेनहाइट (0.5 डिग्री सेल्सियस) अधिक हो जाता है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक जलवायु पर गहरा प्रभाव पड़ता है। दुनिया तेजी से तटस्थ अवस्था से बाहर निकल रही है। दुनिया का सबसे हालिया अलनीनो मई 2023 से मार्च 2024 तक चला और 2024 को अब तक का सबसे गर्म वर्ष बनाने के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार था। क्लाइमेट ब्रीफ के 21 अप्रैल को प्रकाशित जलवायु आंकलन के अनुसार, यदि आगामी अलनीनो शक्तिशाली या अत्यंत शक्तिशाली होता है, तो 2027 पिछले रिकॉर्ड को पार कर सकता है।

संक्षिप्त समाचार

भूगोल और इतिहास का हिस्सा बने रहना चाहता है कि नहीं

● पाकिस्तान को इंडियन आर्मी चीफ जनरल द्विवेदी ने दे डाली चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सेना के प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने शनिवार को कहा कि अगर पाकिस्तान लगातार आतंकवादियों को पनाह देता रहा और भारत के खिलाफ आतंकवाद जारी रखा, तो उन्हें खुद यह तय करना होगा कि वे आने वाले समय में भूगोल का हिस्सा बने रहना चाहते हैं या इतिहास का। दिल्ली के मानेकशॉ सेंटर में सेना संवाद कार्यक्रम में फिर से ऑपरेशन सिंदूर जैसी परिस्थितियां बनने के सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने यह बयान दिया। उन्होंने आगे कहा कि पाकिस्तान को भारत विरोधी आतंकवादियों को पनाह देना बंद करना होगा। इससे पहले 12 मई को विदेश मंत्रालय ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान चीन के पाकिस्तान को समर्थन देने पर कहा कि आतंकवाद की रक्षा करने वाले देशों को दुनिया देख रही है कि वे खुद को किसके साथ जोड़ रहे हैं। उन्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि ऐसे काम से उनकी प्रतिष्ठा पर क्या प्रभाव पड़ता है। मंगलवार को विदेश मंत्रालय की प्रेस ब्रीफिंग के दौरान उन रिपोर्ट्स का जिक्र हुआ, जिनमें चीन का नाम है।

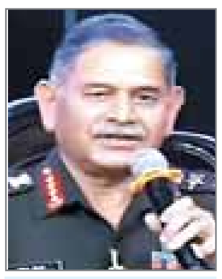

आपरेशन सिंदूर सोची-समझी कार्रवाई– विदेश मंत्रालय ने कहा कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए आतंकवादियों पर हमला करता है। पहलगाम में हुए आतंकी हमलों के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के जरिए करारा जवाब दिया है। यह एक सोची-समझी कार्रवाई थी।

केंद्रीय मंत्री ने योगी की तारीफ की, कहा- बहुत सख्त हैं

● सीएम बोले-जाति में बांटने वाले आपके हितैषी नहीं, गोरखपुर स्टेडियम का शिलान्यास किया

गोरखपुर (एजेंसी)। सीएम योगी और केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने शनिवार को गोरखपुर में इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम का शिलान्यास किया। योगी ने कहा- जो लोग जाति, क्षेत्र और भाषा के नाम पर बांटते हैं, वे आपके हितैषी नहीं हो सकते। जब भी इनके (सपा) पास सत्ता आई, उसका इस्तेमाल अपने परिवार के लिए किया। भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी की गई। योगी ने कहा- 500 खिलाड़ियों की नई भर्ती फिर से निकाली गई है। जिन्होंने इंटरनेशनल लेवल पर मेडल जीते हैं, उन्हें सीधी भर्ती के माध्यम से नियुक्ति पत्र मिलेगा। केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने सीएम योगी की तारीफ की। उन्होंने कहा- आमतौर पर योगीजी की छवि एक सख्त और दृढ़ प्रशासक के रूप में है। लेकिन, उनके पास किसी भी विषय को गहराई तक समझने की अद्भुत क्षमता है। वे हर योजना की बारीकियों को समझने का काम करते हैं। केंद्रीय मंत्री ने गुरु गोरखनाथ के दर्शन-पूजन भी किए। शिलान्यास कार्यक्रम में गोरखपुर सांसद रवि किशन कार पुलिंग करके पहुंचे। उनके साथ केंद्रीय मंत्री कमलेश पासवान और कुशीनगर सांसद विजय दुबे भी मौजूद रहे।

500 खिलाड़ियों की नई भर्ती फिर से निकाली है– सीएम योगी ने कहा- अब तक हम लोग 534 से अधिक नौजवानों को नौकरी दे चुके हैं। सीधी भर्ती में ललित उपाध्याय, दीप्ति शर्मा, पारुल चौधरी, अर्जुन देशवाल, प्रवीण कुमार, राजकुमार पाल को सीधे डिप्टी एसपी का पद दिया है।

देवास पटाखा फैक्ट्री हादसे में प्रशासन का बड़ा एक्शन

एसडीएम और नायब तहसीलदार सस्पेंड, निरीक्षण में की थी लापरवाही

देवास (नप्र)। मध्य प्रदेश के देवास जिले के टोंककला स्थित पटाखा फैक्ट्री में हुए हादसे में प्रशासन ने बड़ी कार्रवाई की है। टोंकखुर्द एसडीएम संजीव सक्सेना और टप्पा चिड़ावद के नायब तहसीलदार रवि शर्मा को तत्काल प्रभाव से सस्पेंड कर दिया गया है। शुरुआती जांच में पाया गया था कि दोनों ने काम में लापरवाही की थी जिस कारण से यह हादसा हुआ। संभागायुक्त के निर्देश के बाद यह कार्रवाई की गई है।

काम में लापरवाही बरतने का आरोप– उज्जैन संभायुक्त द्वारा जारी आदेश में कहा गया है- टोंककला तहसील स्थित पटाखा फैक्ट्री में आगजनी की घटना घटित हुई है। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व टोंकखुर्द ने विस्फोटक सामग्री के संबंध में शासन द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार निरीक्षण में गंभीर लापरवाही बरती। आदेश में कहा गया है संजीव सक्सेना, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व अनुभाग टोंकखुर्द एवं प्रभारी डेप्युटी कलेक्टर द्वारा अपने कर्तव्यों के निवर्हन में गंभीर लापरवाही, उदासीनता एवं अनियमितता बरती गई, जिसके कारण घटना हुई। उन्हें तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है। निलंबन के दौरान इनका मुख्यालय कार्यालय कलेक्टर जिला देवास होगा। निलंबन अवधि में इन्हें नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ते मिलते रहेंगे।

गुरुवार को हुआ था हादसा

जिला मुख्यालय से करीब 20 किमी दूर टोंककला में यह पटाखा फैक्ट्री है। फैक्ट्री में ब्लास्ट की गूंज आसपास के इलाकों में सुनाई दे रही थी। वहीं, इस हादसे में वहां काम करे श्रमिकों के चिथड़े उड़ गए हैं। शवों के टुकड़ों सड़कों पर मिले हैं। आसपास के इलाकों में अफरातफरी की स्थिति है। बताया जा रहा है कि 20 से अधिक लोग जख्मी हुए थे। इस हादसे में 6 लोगों मजदूरों की मौत हो गई थी।

मालिक की गिरफ्तारी

कारखाना मालिक को गिरफ्तार कर लिया गया है। घटना की मजिस्ट्रेटी जांच के आदेश भी दिए गए हैं। गृह विभाग के अपर मुख्य सचिव संजय शुक्ला ने बताया कि केंद्र सरकार के पेट्रोलियम और विस्फोटक सुरक्षा संगठन, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और अपराध विज्ञान प्रयोगशाला के अधिकारी पटाखा कारखाने में हुए धमाके की जांच कर रहे हैं।

चेहरा हाथों में भरकर चूमा, बाल सहलाए और खूब दुलारा

खुद कागज लेकर पहुंचे कलेक्टर तो बुजुर्गों ने लुटाया प्यार, वर्षों बाद मिली खुशी

दमोह (नप्र)। प्यार-स्नेह और अपनेपन में आईएएस जैसा ओहदा भी इंसान भूल जाता है! एमपी के दमोह में कुछ ऐसा नजारा देखने को मिला, जिसने सभी को भावुक कर दिया। यहां कलेक्टर प्रताप नारायण सिंह को बुजुर्ग महिलाओं ने बच्चों जैसे बाजू में बैठाकर दुलार किया। कोई उनके चेहरे को हाथ में लेकर दुलारती नजर आई तो कोई उनके सिर पर बार-बार हाथ फेरकर आशीर्वाद तो कोई गले लगा रहीं थी।

अपने सख्त प्रशासनिक कार्यप्रणाली के लिए पहचाने जाने वाले दमोह कलेक्टर प्रताप नारायण सिंह, जब वृद्धाश्रम पहुंचे तो यहां अलग ही अंदाज और नजारा देखने को मिला। कलेक्टर ने यहां बुजुर्ग महिलाओं को उनकी सालों से रुकी पेंशन स्वीकृत होने के कागज सौंपे तो महिलाएं खुशी से भावुक हो उठी। उसके बाद यहां जो आत्मीयता भरा भावुक दृश्य नजर आया, उसकी किसी को कल्पना भी नहीं थी।

मां के जैसा आईएएस को दिया दुलार– बुजुर्ग महिलाओं ने कलेक्टर को अपने पास बुलाकर बैठा लिया। कलेक्टर ने बुजुर्गों के पैर छू लिए। इसके बाद एक महिला उनके चेहरे को बार-बार चूमने लगी और चेहरा हाथों में लेकर बेटे जैसा दुलार करने लगी। किसी महिला ने उनके सिर पर बार-बार हाथ फेरकर खूब आशीर्वाद दिया तो किसी महिला ने उन्हें गले लगा लिया। यहां अफसर और आम आदमी के बजाय मां बेटे जैसा अपनापन नजर आया।

बुजुर्ग महिलाओं ने पेंशन बंद होने की समस्या बताई थी– दरअसल पिछले दिनों कलेक्टर प्रताप नारायण यादव वृद्धाश्रम पहुंचे थे। उस दौरान उन्हें बताया गया था कि उनकी पेंशन काफी समय से बंद है। इसको लेकर कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को यहां भेजकर सबकी दस्तावेजी कार्रवाई कर ईकेवायसी पूरी कराई ओर सभी की वृद्धावस्था पेंशन चालू कराई थी।

स्कूटी को धक्का लगाकर पेट्रोल पंप पहुंची महिला कांग्रेस

पेट्रोल-डीजल के बढ़ती कीमतों का विरोध जताया प्रदर्शन खत्म होते ही कारों से रवाना हुईं

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शनिवार को पेट्रोल-डीजल की बढ़ती कीमतों के विरोध में महिला कांग्रेस ने अनोखा 'धक्का मार्च' निकाला। महिला कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष रीना बोरासी के नेतृत्व में कार्यकर्ता स्कूटी को धक्का देते हुए न्यू मार्केट स्थित नानके पेट्रोल पंप पहुंचीं।

यहां केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी की गई। महिला कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रतीकात्मक रूप से पेट्रोल भरवाया और ईंधन कीमतों में राहत की मांग की। दिलचस्प बात यह रही कि प्रदर्शन खत्म होने के बाद कई कार्यकर्ता चार पहिया वाहनों में बैठकर वापस रवाना हुईं।

महिला कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष रीना बोरासी ने कहा किपेट्रोल-डीजल की मार सिर्फ मुझ पर नहीं, पूरे देश की आम जनता पर है। इसका सीधा असर घर के बजट पर पड़ता है। रसोई से लेकर सब्जी तक हर चीज महंगी हो जाती है।

● एमएलसी उपचुनाव की हार एनडीए के लिए झटका

बिहार विधान परिषद उप चुनाव में आरजेडी की बल्ले-बल्ले

पटना (एजेंसी)। बिहार विधान परिषद के उप चुनाव में जदयू की हार, एनडीए के लिए झटका है। उसने अपनी जीती हुई सीट राजद के हाथों गंवा दी। लेकिन इस नतीजे को भविष्य के लिए जनमत का संकेत नहीं माना जा सकता।

भोजपुर-बक्सर स्थानीय प्राधिकारी निर्वाचन क्षेत्र में कुल 6 हजार 86 मतदाता थे। इस चुनाव में केवल स्थानीय निकाय के प्रतिनिधियों को ही वोट डालना था। जैसे, मुखिया, सरपंच, वार्ड पार्षद, पंचायत समिति सदस्य, जिला परिषद सदस्य आदि। जब कि दूसरी तरफ किसी विधानसभा क्षेत्र में मतदाताओं के कुल संख्या दो लाख- तीन लाख से अधिक होती है। अब जैसे तेजस्वी यादव के चुनाव क्षेत्र का ही उदाहरण ले लिया जाए। राघोपुर में कुल वोटरों की संख्या 3 लाख 44 हजार 369 है। कहां छह हजार मतदाता और कहां तीन लाख से अधिक मतदाता।

● पार्टी को फिर खड़ा करने की अपील, कहा-जरूरत पड़ी तो खुद दफ्तर पेंट करूंगी

जो टीएमसी छोड़कर जाना चाहता है जाए: ममता

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की पूर्व मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने शुक्रवार को कोलकाता में पार्टी कार्यकर्ताओं से टीएमसी के संगठन को नए सिरे से खड़ा करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि हम पार्टी दफ्तरों को दोबारा खोलेंगे, उन्हें रंगेंगे और मजबूती से काम पर लौटेंगे। जरूरत पड़ी तो मैं खुद भी दफ्तरों को पेंट करने के लिए तैयार हूं। इसके बाद उन्होंने कहा कि जो लोग दूसरी पार्टियों में जाना चाहते हैं, वे पूरी तरह आजाद हैं और वे किसी को भी जबरदस्ती रोक कर रखने में यकीन नहीं रखतीं। बैठक के दौरान ममता के भतीजे और पार्टी महासचिव अभिषेक बनर्जी भी मौजूद थे। बैठक में ममता ने कहा कि चुनाव के नतीजों में भले ही टीएमसी को 80 सीटें मिली हों, लेकिन यह जनादेश की लूट है। इससे उनका हौंसला नहीं टूटेगा। 21 मई को फालता सीट पर होने वाले उपचुनाव के उम्मीदवार भी मौजूद थे। दरअसल, फालता में 29 अप्रैल को वोटिंग हुई थी, लेकिन ईवीएम छेड़खानी के आरोपों के बाद चुनाव आयोग ने वहां दोबारा वोटिंग कराने का फैसला किया।

ममता ने इस्तीफा नहीं दिया, चुनावी हिंसा पर कोर्ट पहुंची

ममता ने 4 मई को कोलकाता में प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान कहा था, मैं सीएम पद से इस्तीफा नहीं दूंगी। हम जनादेश से नहीं, साजिश से हारे हैं। इसलिए इस्तीफा देने राजभवन नहीं जाऊंगी। चुनाव आयोग असली विलेन है। उसने भाजपा के साथ मिलकर 100 सीटें लूटीं। अब मेरे पास कोई कुर्सी नहीं है, मैं आजाद पंछी हूं। कहीं से भी चुनाव लड़ सकती हूं, सड़कों पर रहूंगी। ममता जज के सामने पेश हुईं।

अमेरिका शुरू करेगा 'ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0'

● ईरान पर भीषण हमले का प्लान तैयार, चीन से लौटे ट्रंप पर नजर

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिकी सेना कथित तौर पर एक बार फिर ईरान पर हमलों की योजना बना रही है। ईरान के साथ शांति वार्ता के किसी नतीजे पर ना पहुंचने के बाद अमेरिका को लग रहा है कि सैन्य हमले ही तेहरान पर दबाव बना सकते हैं।

डोनाल्ड ट्रंप के शुक्रवार को खत्म हुए चीन दौरे के बाद ईरान पर हमले किए जा सकते हैं। अमेरिका और इजरायल गठबंधन ने 28 फरवरी को ईरान पर हमले किए थे। इसके बाद दोनों पक्षों में भीषण लड़ाई हुई। 8 अप्रैल को अस्थायी सीजफायर के बाद दोनों पक्षों की बातचीत के जरिए समझौते पर पहुंचने की कोशिश अभी तक नाकाम रही है।

इससे फिर लड़ाई शुरू होने की आशंका ने जोर पकड़ा है। द न्यूयॉर्क टाइम्स ने शुक्रवार को अपनी रिपोर्ट में बताया है रि अमेरिकी अधिकारियों ने ईरान के खिलाफ सैन्य हमले फिर से शुरू करने के लिए ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0 की योजना तैयार की है। सैन्य समाधान का यह प्लान तब बना है, जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने चीन का अपना दो दिवसीय दौरा पूरा कर लिया है। द न्यूयॉर्क टाइम्स की रिपोर्ट में बताया गया है कि पेंटागन आने वाले दिनों में ऑपरेशन एपिक फ्यूरी 2.0 की योजना बना रहा है। रक्षा सचिव पीट हेगसेथ ने इस सप्ताह कांग्रेस के समक्ष गवाही देते हुए सांसदों से कहा है कि यदि आवश्यक हुआ तो हमारे पास स्थिति को आगे बढ़ाने यानी हमले तेज करने की योजना मौजूद है। पश्चिम एशिया के दो अधिकारियों ने अखबार को बताया कि अमेरिका और इजरायल के अधिकारी ईरान के खिलाफ हमलों को अगले सप्ताह फिर से शुरू करने की गहन तैयारियों में जुटे हुए हैं।

जमीनी हमले या खर्ग पर कब्जा

रिपोर्ट बताती है कि अमेरिका की योजना में तीन विकल्प हैं। इसमें पहला ईरान के सैन्य और बुनियादे ढांचे पर हवाई हमलों का है। दूसरा विकल्प यह है कि ईरान की जमीन पर विशेष अभियान के लिए सेना उतारी जाए ताकि वे जमीन के काफी नीचे गहराई में दबे हुए परमाणु सामग्री के भंडारों को खत्म कर सकें। प्लान का तीसरा विकल्प यह है कि अमेरिकी सेना खर्ग द्वीप पर कब्जा करे। खर्ग ईरानी तेल निर्यात का एक बड़ा केंद्र है। इसमें मुश्किल यह है कि खर्ग पर कब्जा बनाए रखने के लिए काफी ज्यादा सैनिकों की जरूरत पड़ेगी। ईरान को यहां की परिस्थिति से मिलने वाला फायदा अमेरिका की मुश्किल बढ़ाएगा। अखबार ने दावा किया कि आर्मी के पास प्लान है लेकिन ट्रंप ने अभी तक हमले फिर से शुरू करने का फैसला नहीं किया है। डोनाल्ड ट्रंप लगातार ईरान को धमकी दे रहे हैं।

प्रदेश में भीषण गर्मी का दौर

● 12 शहरों में तापमान 43डिग्री पार, कहीं-कहीं आंधी-बारिश भी, इंदौर-उज्जैन में वॉर्म नाइट का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। एमपी में आसमान से जैसा आग बरस रही है। अधिकांश हिस्से में भीषण गर्मी है। 12 शहरों में तापमान 43 डिग्री के पार रहा। खंडवा में सबसे ज्यादा 45.1 डिग्री सेल्सियस पहुंच गया। वहीं, भोपाल में सड़क का डामर पिघल गया। शनिवार को 37 जिलों में लू थपेड़े चले।, जबकि इंदौर, उज्जैन-मंडला में वॉर्म नाइट यानी, रात का तापमान अधिक रहेगा। मौसम केंद्र के अनुसार, शनिवार को इंदौर, उज्जैन, रतलाम, धार और देवास में तीव्र लू का ऑरेंज अलर्ट है। भोपाल, ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, हरदा, बुरहानपुर, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, सीहोर, शाजापुर, राजगढ़, आगर-मालवा, नीमच, मंदसौर, झाबुआ, आलीराजपुर, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, सागर, दमोह, मंडला में लू चलेगी। इंदौर, उज्जैन और मंडला में वॉर्म नाइट रहेगी। यानी, यहां रात में तापमान अधिक बना रहेगा। इन शहरों में अधिकतम तापमान 44 डिग्री के पार रहेगा।

इन जिलों में गर्मी रहेगी, लू नहीं चलेगी

वहीं, जबलपुर, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, मैहर, कटनी, उमरिया, शहडोल, डिंडौरी, अनूपपुर, नरसिंहपुर, सिवनी, बालाघाट, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा और बैतूल में भी तेज गर्मी पड़ेगी। हालांकि, यहां लू का अलर्ट नहीं है।

पुराने शहर में आग, मची अफरा-तफरी

लक्ष्मी टॉकीज के पास फल के ठेले जले; विधायक अकील ने मौजूद रहकर बुझवाई आग

भोपाल (नप्र)। भोपाल के लक्ष्मी टॉकीज स्थित सराए के पास शुक्रवार देर रात आग लग गई। आग फल के ठेलों में लगी। इससे अफरा-तफरी मच गई। उत्तर विधायक आतिफ अकील ने मौके पर

मौजूद रहकर आग बुझवाई। इसके बाद लोगों ने राहत की सांस ली। लक्ष्मी टॉकीज स्थित सराए में ही विधायक अकील का घर भी है। आग लगने की सूचना मिलते ही वे मौके पर पहुंचे। फायर ब्रिगेड को भी सूचना दी गई। दमकल के आने से पहले लोग आग पर काबू पाने में जुट गए।

सराए में रखे फल से भरे हुए ठेले जले

आगजनी में सराए में रखे फलों से भरे ठेले जल गए। निगम की दमकलें आने से पहले लोग आग बुझाने के लिए दौड़ पड़े। आगजनी के दौरान ठेलों के टायर में ब्लास्ट होने लगा। इसलिए लोगों ने ठेलो को तुरंत बाहर किया। इससे कुछ लोगों के हाथ भी जल गए।
गाड़ियां जलने से बचीं- जिस जगह आग लगी, उसके पास में ही कई गाड़ियां भी खड़ी थीं। इससे बड़ा हादसा होने का आंदेशा था। इसलिए लोगों ने गाड़ियों को बाहर निकाला और फिर आग बुझाई।

भोपाल के कोलार रोड पर एसयूवी में आग

अचानक धधक उठी कार, अफरा-तफरी मची; पास में इलेक्ट्रिक चार्जिंग स्टेशन था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार रोड पर शनिवार दोपहर एक एसयूवी कार में आग लग गई। कुछ ही देर में पूरी कार धुं-धुंकर जल उठी। आग की लपटें 10 फीट ऊपर तक उठ गई। गनीमत रही कि कुछ ही देर में आग पर काबू पा लिया गया, वरना ब्लास्ट भी हो सकता था। कोलार रोड पर चूना भट्टी रेस्ट हाउस के आगे गार्डन रेसीडेंस है। इसके गेट पास ही एक एसयूवी में दोपहर 3.30 बजे आग लगी। शुरुआत में धुआं निकला और फिर आग की लपटें ऊंची उठने लगी। कोलार फायर स्टेशन से दमकल मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक कार पूरी जल चुकी थी।

वर्कशॉप की लापरवाही की बात भी सामने आई

कार में आग लगने के पीछे वर्कशॉप की लापरवाही की बात भी सामने आई है। बताया जाता है कि ग्राहक नितिन रघुवंशी की कार पिछले 15 दिन से सुधार कार्य के लिए वर्कशॉप में खड़ी थी। शनिवार दोपहर शोरूम कर्मचारी कार को ट्रायल के लिए लेकर निकले थे, तभी लापरवाही के चलते चलती कार में आग लग गई।
घटना का सबसे रोचक पहलू यह रहा कि उसी दौरान ग्राहक नितिन रघुवंशी वहां से गुजर रहे थे। उन्होंने सड़क पर अपनी ही कार को जलते देखा तो तुरंत शोरूम पर फोन लगाकर कार की जानकारी मांगी। आरोप है कि शोरूम कर्मचारियों ने उन्हें बताया कि कार अभी वर्कशॉप में सुधार कार्य के लिए खड़ी है। इसके बाद ग्राहक ने मौके का वीडियो बनाया और सीधे शोरूम पहुंचकर जमकर हंगामा किया। घटना के बाद शोरूम प्रबंधन की कार्यप्रणाली और कर्मचारियों की लापरवाही पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

देश की अनोखी नीमच हर्बल मंडी

फूल, कांटे, पत्ती, छिलके, बीज, छाल व जड़ सब के मिलते अच्छे दाम

● किसानों के लिए है वरदान, औषधीय फसलों के उत्पादन में देश में आगे मप्र

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के नीमच जिले की हर्बल मंडी प्रदेश के औषधीय फसलों के उत्पादक किसानों के लिए वरदान साबित हुई है। यह देश की एकमात्र मंडी है जहां कांटे, फूल, पत्ती, छिलके, बीज, छाल, जड़ सब बिकते हैं। किसानों को विभिन्न औषधीय फसलों के 500 रूपये से लेकर 2 लाख रूपये प्रति क्विंटल तक भाव मिल जाते हैं। नीमच मंडी की प्रसिद्धि देखते हुए गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के किसान अपनी फसलें लेकर यहां आ रहे हैं।

अप्रैल माह तक मंडी की भरपूर आवक बनी रहती है जो मई के आखरी सप्ताह तक कम होने लगती है। किसानों को निराश नहीं होना पड़ता। हर प्रकार की जड़ी-बूटी बिक जाती है।

मुख्यमंडी प्रांगण में 16 शेड हैं। यह एकमात्र मंडी है जहां 40-50 प्रकार के औषधीय पौधों की खरीदी बोली लगाकर होती है। मसाला फसलों की खरीदी करने वाली देश की एक मात्र सबसे बड़ी मंडी है।

श्री नीलेश पाटीदार नीमच के बड़े काश्तकार हैं। उनकी 45 एकड जमीन है। परिवार में 12 सदस्य हैं। वे पिछले दो-तीन सालों से मसाला फसलों की खेती कर रहे हैं। वे बताते हैं कि इसबगोल, इरानी अकरकारा, चिरायता, आजवाइन, किनोवा, चियासीड, तुलसी बीज जैसी फसलों के बहुत अच्छे दाम मिल जाते हैं। लहसून के भी अच्छे दाम मिलते हैं। नीलेश को इस बात की प्रसन्नता है कि मुख्यमंत्री डा मोहन यादव औषधीय फसलों के उत्पादन के लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं। वे कहते हैं कि सरकार जड़ी-बूटी की खेती के तौर-तरीकों के संबंध में अच्छी ट्रेनिंग दिलवायेगी तो अच्छे परिणाम मिलेंगे। फिलहाल सरकार की ओर से हर जरूरी

सहूलियतें मिल रही हैं। मदद सरकार की और मेहनत हमारी। जड़ी-बूटी उगाने वाले किसानों के लिये नीमच मंडी एक बड़ा सहारा है।

श्री प्रहलाद सिंह रतलाम जिले के आजमपुर डोडिया गांव में रहते हैं। उन्हें अश्वगंधा और अकरकारा बीज बेचने के अच्छे दाम मिले हैं। मंडी में समय पर बोली लग जाती है और आसानी से फसल बिक जाती है। किसानों को जरा सी भी परेशानी नहीं होती। मंडी के सब लोगों का व्यवहार बहुत अच्छा है। सरकार ने हमारे जैसे छोटे और मझौले किसानों के लिए मंडी में अच्छी व्यवस्थाएं करा दी हैं।

श्री पंचम सिंह भी इसी गांव के किसान है और आजवाइन, अश्वगंधा लेकर आते हैं। उन्हें तत्काल भुगतान हो जाता है। मंडी की व्यवस्थाएं बहुत अच्छी हो गई हैं। वे बताते हैं कि अब मंडी की प्रसिद्धि दूर-दूर तक फैल गई है। गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, महाराष्ट्र , उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के किसान लंबी दूर तय कर यहां माल जाते हैं। अच्छी तुलाई और अच्छे दाम और तत्काल भुगतान के कारण सब यहां आना पसंद करते हैं। इसबगोल, अश्वगंधा, कलौंजी, सतावारी, सफ़ेद मूसली, केसर, सर्पगंधा, अकलकारा जड, जैसी फसलों के दाम ज्यादा है और मांग भी हमेशा बनी रहती है।

मंडी की विशेषताओं की चर्चा करते हुए मंडी सचिव श्री उमेश बसेडिया शर्मा बताते हैं कि समय पर नीलामी, गुणवत्तापूर्ण तुलाई और भुगतान की व्यवस्था किसानों के लिए वरदान साबित हुई है। किसानों के हित में निरंतर सुविधाएं बढाई जा रही हैं। वित्ततीय प्रबंधन निरंतर सुधरा है। वर्ष 2024?25 में 64.16 लाख क्विंटल आवक हुई थी और 2025?26 में 72.40 क्विंटल आवक हुई थी। वे बताते हैं कि मंडी ने किसानों के हित की सभी व्यवस्थाओं को चुस्त-दुरूस्त कर दिया है। राष्ट्रीय पादप बोर्ड ने साढे पांच करोड़ रूपये का अनुदान भी मंडी की अधोसंरचनात्मक गतिविधियों के लिये उपलब्ध कराया है। इलेक्ट्रानिक नाप-तौल और सीधे व्यापारियों के गोडाउन में पहुंचाने की व्यवस्था की गई है।

प्रदेश में 46 हजार 837 हैक्टेयर क्षेत्र में औषधीय फसलों

मध्यप्रदेश औषधीय फसलों के उत्पादन में देश का अग्रणी राज्य है। प्रदेश में 46 हजार 837 हैक्टेयर क्षेत्र में औषधीय फसलों ईसबगोल, सफेद मूसली, कोलियस व अन्य फसलों की खेती की जा रही है। वर्ष 2024-25 में प्रदेश में लगभग सवा लाख मीट्रिक टन औषधीय फसलों का उत्पादन हुआ है। देश और विदेश में औषधीय फसलों की बढ़ती मांग के कारण किसान इन फसलों की ओर आकर्षित हुए हैं। देश में औषधीय फसलों का 44 प्रतिशत हिस्सा मध्यप्रदेश में उत्पादित होता है। मुख्यमंत्री डा मोहन यादव के निर्देश पर औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के साथ किसानों को अनुदान और अन्य सहूलियतें दी जा रही है। औषधीय पौधों की खेती से किसानों की आय बढ़ाने और रोजगार के अवसर पैदा करने के प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य सरकार किसानों को औषधीय पौधों की खेती के लिए 20 प्रतिशत से 50 प्रतिशत तक का अनुदान देती है। औषधीय पौधों की खेती और संग्रह से ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। प्रदेश में प्रमुख रूप से अश्वगंधा, सफेद मूसली, गिलोय, तुलसी और कोलियस जैसी कई औषधीय फसलों का उत्पादन होता है।

मुख्यमंत्री ने सिक्किम के स्थापना दिवस पर दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्राकृतिक सौंदर्य, समृद्ध लोक संस्कृति और श्रमशीलता की धरा सिक्किम के स्थापना दिवस पर सिक्किम वासियों को शुभकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री प्रेमसिंह तमांग के नेतृत्व में राज्य प्रगति के सुपथ पर अविराम गतिमान रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से सिक्किमवासियों के लिए सुख, शांति व समृद्धि की कामना है।

मुख्यमंत्री ने वट सावित्री व्रत की दीं मंगलकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'वट सावित्री व्रत' की सभी माताओं और बहनों को मंगलकामनाएं दीं हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि सती सावित्री और सत्यवान को समर्पित यह पावन पर्व नारी शक्ति की अटूट श्रद्धा, अखंड सौभाग्य व प्रेम का प्रतीक है। वट सावित्री व्रत सभी के जीवन में अपार खुशियां, संकल्प शक्ति, भक्ति और समृद्धि लेकर आए, बाबा महाकाल से यही प्रार्थना है।

भोपाल मेट्रो के दूसरे फेज के जमीन अधिग्रहण पर विवाद

संत रविदास मंदिर समेत 40 से ज्यादा घर-दुकानें अधिग्रहण की जद में, रहवासी बोले- बिना सहमति मुआवजा दिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जिंसी चौराहा स्थित संत रविदास मंदिर इलाके से गुजर रही मेट्रो लाइन को लेकर नया विवाद सामने आया है। मंदिर के कोशाध्यक्ष माधव सिंह अहिरवार के मुताबिक मेट्रो परियोजना के तहत संत रविदास मंदिर की करीब ढाई हजार स्कायर फीट जमीन अधिग्रहण क्षेत्र में आ रही है, जिससे मंदिर हटाए जाने की आशंका जताई जा रही है।

वहीं, इलाके के कई घर और दुकानें भी अधिग्रहण की जद में हैं। रहवासियों का आरोप है कि बिना सहमति मुआवजे की राशि सीधे खातों में ट्रांसफर की जा रही है। दरअसल, भोपाल मेट्रो के दूसरे फेज का काम शुरू हो चुका है। यह ऑरेंज लाइन मेट्रो परियोजना है, जो सुभाष नगर से करोंद तक प्रस्तावित है। इसी रूट के तहत जिंसी चौराहा और संत रविदास मंदिर क्षेत्र में जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया चल रही है।

लोगों का यह भी आरोप है कि मेट्रो

परियोजना के लिए जमीन की नपाई तय मानकों के अनुसार नहीं की जा रही। उनके मुताबिक अधिकारी अलग-अलग जगहों पर कभी 6 मीटर, कभी 9 मीटर तो कहीं 15 मीटर तक जमीन की नपाई कर रहे हैं, जिससे भ्रम की स्थिति बन रही है।

डबल सर्विस लेन कहीं और शिफ्ट की जाए- जिंसी चौराहे पर दुकान चलाने वाले जमीरुद्दीन ने आरोप लगाया कि मेट्रो लाइन के अधिकारियों ने 200 फीट रोड का विकल्प छोड़कर प्रभावशाली लोगों की दुकानों को बचाने के लिए जानबूझकर लाइन को इस इलाके से निकाला है।

उनका कहना है कि प्रस्तावित डबल सर्विस लेन को किसी अन्य स्थान पर शिफ्ट किया जाना चाहिए। जमीरुद्दीन ने कहा कि यदि ये लाइन यहां से निकलती है तो 40 से ज्यादा घर और दुकानें इसकी जद में जाएंगे।

बिना जानकारी दिए खातों में रुपए डाले जा रहे

वहीं, धन लक्ष्मी मार्बल के संचालक मनीष साहू का आरोप है कि बिना पूर्व सूचना दिए उनके खातों में मुआवजे की राशि डाली जा रही है। उन्हें यह भी नहीं बताया जा रहा कि उनकी कितनी जमीन अधिग्रहित की जा रही है और मुआवजे का निर्धारण किस आधार पर किया गया है।

कजलीखेड़ा में स्वीमिंग पूल में डूबा विधायक का कर्मचारी, मौत

दोस्तों के साथ पार्टी करने रिसोर्ट गया था, बिना बताए पानी में चला गया

भोपाल (नप्र)। कजलीखेड़ा में बने केके रिसार्ट के स्विमिंग पूल में डूबने से विधायक भगवानदास सबनानी के बंगले पर काम करने वाले युवक की मौत हो गई। हादसा शुक्रवार रात का है। वह दोस्तों के साथ पार्टी करने गया था। दोस्तों ने बताया कि युवक को पूरी तरह से तैरना नहीं आता था। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

कुनाल महावत, मृतक

कजलीखेड़ा कुनाल महावत पिता बलवीर महावत 22 वर्ष निवासी बरखेड़ी विधायक भगवानदास सबनानी के बंगले पर काम करता था। कजलीखेड़ा के केके रिसोर्ट में दोस्त अनीकेत शाक्य, कुनाल और दो अन्य के साथ गया था। चार दोस्त रिसोर्ट के एक हिस्से में बैठे थे। इसी बीच कुनाल वहां से चला गया, कुछ देर नहीं दिखा तब दोस्तों ने उसकी तलाश की। लगा कि कहीं बहार चला गया होगा। बाहर जाकर देखा तो भी नहीं मिला। कॉल करने पर कॉल नहीं लगा। तब उसकी तलाश शुरू की, स्वीमिंग पूल की ओर गए तो बॉडी पानी में तैरती दिखी। जिसे बाहर निकालने के बाद अस्पताल पहुंचाया।

दोस्त बोला 20 मिनट तक तलाशते रहे

मृतक के दोस्त अनीकेत शाक्य ने बताया कि कुनाल विधायक भगवानदास सबनानी के बंगले पर काम करता था।

हम दोस्त शुक्रवार की रात को रिसार्ट में बैठे थे, तभी कुनाल कहीं चला गया। लगा कि वह टायलेट गया होगा, कुछ देर ध्यान नहीं दिया। जब उसने कॉल नहीं पिक किए तो तलाश शुरू की, करीब 20 मिनट तक आस पास देखते रहे।

भेल व्याख्यान माला, सेहत से सफलता

भोपाल। इलाज से बेहतर रोकथाम है। इस भावना के परिप्रेक्ष्य में भेल स्थित कस्तूरबा अस्पताल में व्याख्यान माला आरंभ की गई है। इसके अंतर्गत विश्व रक्तचाप दिवस पर शनिवार 16 मई को रक्तचाप समस्या पर सावधानी एवं निवारण विषय पर भेलकर्मी समुदाय के लिए व्याख्यान आयोजित किया गया। विशेषज्ञ डॉ. दीपमलिका आतराम ने पॉवर पॉइंट स्लाइड्स के सहायता से रक्तचाप के संभावित कारणों व खतरों की न केवल जानकारी साझा की बल्कि सावधानी और निवारण के उपाय भी बताए गए। आयोजन की मुख्य अतिथि भेल चिकित्सा प्रमुख डॉ. पोमिला सचदेव ने अपने संबोधन में अस्पताल प्रबंधन द्वारा हाल ही में भेलकर्मी समुदाय की मेडिकल सहायता हितार्थ कदमों की जानकारी देते हुए उच्च रक्तचाप से बचाव के सूत्र साझा किये। इस अवसर पर पूर्व भेल चिकित्सा प्रमुख डॉ. अल्पना तिवारी विशेष रूप से उपस्थिति थीं जिनके नेतृत्व में इस व्याख्यान माला का सूत्रपात हुआ था।

दीपक बोहरा आयेंगे जनपरिषद के 37 वें वार्षिक समारोह में

भोपाल। अग्रणी सामाजिक संस्था जनपरिषद के 37 वे वार्षिक समारोह में पूर्व राजनायिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर, अंतर्राष्ट्रीय विषयों के अग्रणी ज्ञाता श्री दीपक बोहरा जी ने आने की स्वीकृति दी है। जन परिषद का 37 वा वार्षिक एवं सम्मान समारोह आगामी 23 जून को, भोपाल में आयोजित होगा। जन परिषद के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी श्री एन के त्रिपाठी एवं संस्था के महासचिव श्री अजय श्रीवास्तव नीलू जी के अनुसार, समारोह में पुलिस महानिदेशक श्री कैलाश मकवाना, एयर मार्शल श्री प्रमोद श्रीवास्तव एवं एडिशनल चीफ सेक्रेटरी श्री अनुपम राजन जी को भी आमंत्रित किया गया है। प्रतिवर्षानुसार, इस समारोह में कुछ उपलब्धि प्राप्त व्यक्तित्वों को सम्मानित भी किया जाएगा।

गर्मी में महिला अभ्यर्थी की तबीयत बिगड़ी, पुलिस चेतावनी के बीच घंटों चला हंगामा

शिक्षक भर्ती में पदवृद्धि की मांग पर डीपीआई पहुंचे अभ्यर्थी

भोपाल (नप्र)। भोपाल में शिक्षक भर्ती परीक्षा-2025 पास कर चुके अभ्यर्थियों का आंदोलन शनिवार को और उग्र हो गया। पदवृद्धि और जल्द जॉइनिंग की मांग को लेकर प्रदेशभर से बड़ी संख्या में वर्ग 2 और वर्ग 3 के अभ्यर्थी लोक शिक्षण संचालनालय (डीपीआई) पहुंचे और नारेबाजी करते हुए प्रदर्शन शुरू कर दिया। दोपहर की भीषण गर्मी में प्रदर्शन कर रही एक महिला अभ्यर्थी की तबीयत बिगड़ गई। मौके पर एंबुलेंस भी पहुंची, लेकिन युवती ने अस्पताल जाने से इनकार करते हुए आंदोलन जारी रखा।

तेज धूप में सड़क पर बैठे अभ्यर्थी- दोपहर करीब 12 बजे शुरू हुए प्रदर्शन में अभ्यर्थी तेज धूप के बीच डीपीआई परिसर के बाहर धरने पर बैठ गए। पद वृद्धि और दूसरी काउंसलिंग की मांग को लेकर लगातार नारेबाजी होती रही। इसी दौरान गर्मी की वजह से एक महिला अभ्यर्थी की तबीयत बिगड़ गई। साथी अभ्यर्थियों ने

मौके पर ही उन्हें पानी, एनर्जी ड्रिंक और दवाइयां दीं, जिसके बाद उनकी हालत सामान्य हुई। महिला अभ्यर्थी की तबीयत बिगड़ने के बाद एंबुलेंस मौके पर पहुंची, लेकिन युवती ने अस्पताल जाने से इनकार कर दिया।

पुलिस बोली- परिसर खाली करो, नहीं तो कार्रवाई- प्रदर्शन के दौरान पुलिस ने अभ्यर्थियों को परिसर खाली करने की चेतावनी दी। इसे लेकर पुलिस और प्रदर्शनकारियों के बीच काफी देर तक बहस और हंगामे की स्थिति बनी रही। अभ्यर्थियों का आरोप है कि वे न्यायपूर्ण मांगों को लेकर प्रदेशभर से भोपाल पहुंचे हैं, लेकिन उन्हें परेशान किया जा रहा है।

8-9 बार आंदोलन, खून से पत्र तक लिखा- अभ्यर्थियों का कहना है कि यह पहला प्रदर्शन नहीं है। नवंबर 2025 से अब तक वे 8 से 9 बार भोपाल पहुंचकर प्रदर्शन कर चुके हैं।

तीसरा कमरा

कहानी

रमेश कुमार 'रिपु'

कल्याणी जब पहली बार वॉकर पकड़कर अस्पताल के गलियारे में चली थी, तब उसके चेहरे पर दर्द से ज्यादा जिद थी। दोनों घुटनों का ऑपरेशन हुए अभी पाँच दिन ही हुए थे। हर कदम पर ऐसा लगता था जैसे किसी ने हड्डियों में कील ठोक दी हो, मगर वह रुकना नहीं चाहती थी।पीछे खड़े महेन्द्र की आँखों में बेचैनी थी।

डॉक्टर हँसते हुए बोले, 'मैडम से ज्यादा डर तो इनके चेहरे पर दिख रहा है। '

कल्याणी मुस्कुराई, 'इन्हें लगता है मैं मर जाऊँगी तो ये अकेले पड़ जाएँगे। '

महेन्द्र ने तुरंत उसकी बाँह थाम ली। 'तुम नहीं रहोगी तो मैं सिर्फ अकेला नहीं पड़ूँगा,खत्म हो जाऊँगा। '

कल्याणी हँसी,मगर भीतर कहीं वह काँप गई।साठ की उम्र में भी महेन्द्र बेहद सधे हुए आदमी लगते थे। हल्की सफेद दाढ़ी, चुस्त शरीर, हमेशा करीने से प्रेस की हुई शर्ट। कोई भी उन्हें चालीस-पैंतालीस से ज्यादा का नहीं मानता। वहीं कल्याणी के चेहरे पर बीमारी की लंबी कहानी लिखी थी। ब्रेस्ट कैंसर का ऑपरेशन, फिर गॉलब्लैडर की पथरी, अब घुटनों का रिप्लेसमेंट। शरीर धीरे-धीरे उसका साथ छोड़ता जा रहा था।लेकिन महेन्द्र ने कभी उसे यह महसूस नहीं होने दिया कि वह अधूरी है।

शादी के दस साल बाद जब डॉक्टरों ने साफ कह दिया कि अब संतान की उम्मीद लगभग खत्म है, तब भी महेन्द्र ने सिर्फ इतना कहा था, 'हर आदमी बाप बनने के लिए नहीं पैदा होता कुछ लोग सिर्फ पति बनने के लिए भी पैदा होते हैं। '

उस दिन कल्याणी देर तक रोई थी।घर लौटने के बाद स्नेहा ने जिस तरह उसकी सेवा शुरू की, उससे कल्याणी का सूना घर जैसे फिर से घर लगने लगा।स्नेहा ऊपर वाले दो कमरों में किराए से रहती थी। साथ में उसका पाँच साल का बेटा ईशान रहता था।

उसका पति सोहन मुंबई में इंजीनियर था। साल में एक-दो बार आता। फिर एक दिन पता चला,तलाक हो चुका है। कोर्ट ने बच्चे का खर्च तय कर दिया है। बस रिश्ता कागज़ पर खत्म हुआ था, आदतों में नहीं।एक रात छत पर कपड़े उतारते हुए कल्याणी ने उसे चुपचाप रोते देख लिया।

'क्या हुआ? '

स्नेहा पहले मुस्कुराई। फिर अचानक आँखें भर आईं।

'कुछ नहीं आंटी, बस कभी-कभी लगता है किसी का इंतजार आदत बन जाए ना तो नींद मर जाती है। '

उस रात पहली बार कल्याणी को लगा,यह लड़की भीतर से बहुत अकेली है।धीरे-धीरे वह किराएदार कम, घर की सदस्य ज्यादा हो गई।

सुबह नाश्ता बनाकर लाती। दोपहर में दवा देती। रात में घुटनों पर सिकाई करती। कई बार महेन्द्र ऑफिस से लौटते तो स्नेहा चाय बनाकर उनके सामने रख देती।

'अंकल, आज शुगर कम डाली है। '

'तुम्हें कैसे पता मुझे कितनी शुगर पसंद है? '

'आंटी ने बताया। '

तीनों हँस पड़ते।और यहीं से शायद वह महीन धागा बुना जाना शुरू हुआ जिसे बाद में कल्याणी खुद काट नहीं पाई।

एक दिन स्नेहा को तेज दर्द उठा। जाँच हुई। रिपोर्ट में बच्चेदानी में गांठ निकली।वह डर गई।कल्याणी ने तुरंत कहा, 'घबराओ मत। तुम्हारे अंकल के बहुत डॉक्टर परिचित हैं। सब ठीक हो जाएगा। '

उस दिन पहली बार महेन्द्र उसे डॉक्टर के पास लेकर गए।वापसी में रास्ते भर स्नेहा चुप रही।फिर अचानक बोली, 'अगर मुझे कुछ हो गया ना तो ईशान का क्या होगा? '

महेन्द्र ने स्टीयरिंग पर हाथ कस लिया।

'कुछ नहीं होगा तुम्हें। '

'सब यही कहते हैं। '

'मैं कह रहा हूँ। '

उसके स्वर में एक अजीब भरोसा था।घर लौटकर उसी रात स्नेहा ने उन्हें मैसेज किया, 'आज अगर आप साथ नहीं होते तो मैं बहुत डर जाती। '

महेन्द्र फोन टेबल पर छोड़कर नहाने चले गए।स्क्रीन चमकी।मैसेज कल्याणी ने पढ़ लिया।बस वही क्षण था जब उसके भीतर की औरत पहली बार चुपचाप जागी।कुछ दिनों बाद महेन्द्र एक साड़ी खरीदकर लाए।कल्याणी खुश हो गई।

'अरे वाह! मेरी पसंद याद है अभी तक? '

महेन्द्र सहज स्वर में बोले, 'स्नेहा ने पसंद करवाई। 'पता नहीं क्यों, उस एक वाक्य ने भीतर कहीं हल्की-सी चुभन पैदा कर दी।उस रात कल्याणी देर तक आईने के सामने खड़ी रही।ढीली पड़ती त्वचा। ऑपरेशन के निशान। झुकी देह।उसी समय बाहर से स्नेहा की खिलखिलाहट सुनाई दी। खुले बाल। जवान चेहरा। जिंदा आँखें।

कल्याणी ने धीरे से अपने प्रतिबिंब से कहा, ' 'औरत पहले अपने शरीर से हारती है फिर दुनिया से। '

महेन्द्र को अभी भी कुछ समझ नहीं आया था।उन्हें लगता था,कल्याणी बस बीमारी और उम्र की वजह से भावुक हो रही है।लेकिन शक बहुत धीरे जन्म लेता है। और एक बार जन्म ले ले तो हर चीज़ में अपना प्रमाण खोज लेता है।

अब कल्याणी नोटिस करने लगी,महेन्द्र स्नेहा के बेटे के लिए खिलौने लाते हैं।स्नेहा महेन्द्र की पसंद का दलिया बनाती है।महेन्द्र कहते, 'तुम अकेले डॉक्टर के पास मत जाया करो। '

स्नेहा पूछती, 'ऑफिस से लौटने में देर हो जाएगी क्या? '

सामान्य बातें थीं।लेकिन अब सामान्य कुछ नहीं रह गया था।कल्याणी का जन्मदिन आया।घर सजाया गया। केक आया। तस्वीरें खिंचीं।एक फोटो में फोटोग्राफर ने महेन्द्र और स्नेहा को साथ खड़ा कर दिया। पीछे हल्की लाइट थी। दोनों सचमुच पति-पत्नी जैसे लग रहे थे।फोटो सोशल मीडिया पर डाली गई।कमेंट आने लगे, 'क्या खूबसूरत कपल है! '

'ऐसा पति मिले तो जिंदगी बन जाए! '

'जोड़ी हो तो ऐसी! '

कल्याणी सब पढ़ती रही।चेहरे पर मुस्कान थी।लेकिन भीतर कोई धीरे-धीरे टूट रहा था।उस रात उसने पहली बार महेन्द्र से पूछा, 'तुम्हें स्नेहा अच्छी लगती है? '

महेन्द्र हँस पड़े। 'तुम्हें क्या हो गया है? '

'सीधा जवाब दो। '

'अच्छी लड़की है। '

'बस लड़की? '

महेन्द्र ने पहली बार उसकी आँखों में देखा। वहाँ मजाक नहीं था।उसके बाद घर बदलने लगा।अब कल्याणी छोटी-छोटी बातों पर चिढ़ने लगी।

'बहुत फिक्र रहती है तुम्हें उसकी। '

'अरे बीमार है। '

'और मैं? '

'तुम्हारे लिए ही तो सब कर रहा हूँ! '

'या मेरे सामने कुछ और पीछे कुछ और? '

महेन्द्र अवाक रह जाते।एक दिन तो उसने साफ कह दिया, 'मैं जानती हूँ तुम दोनों के बीच क्या चल रहा है। '

महेन्द्र जैसे सुन्न पड़ गए। 'होश में हो? '

'उस रात लाइट गई थी। दस मिनट अंधेरा था। मैं कमरे में थी। तुम दोनों बाहर थे। मुझे सब समझ आता है। '

असलियत यह थी कि रिपोर्ट देखकर स्नेहा डर गई थी और रोने लगी थी। महेन्द्र उसे पानी पिला रहे थे।लेकिन अंधेरा हमेशा सच नहीं दिखाता। कई बार वह डर दिखाता है।धीरे-धीरे कल्याणी के आरोप वही करने लगे जिससे वह डरती थी।अब महेन्द्र सचमुच स्नेहा के प्रति सजग रहने लगे।एक दिन कल्याणी ने सबके सामने स्नेहा का अपमान कर दिया।

'बहुत सेवा कर ली तुमने इस घर की! '

स्नेहा का चेहरा सफेद पड़ गया।वह ऊपर जाकर सामान पैक करने लगी।महेन्द्र पीछे-पीछे पहुँचे।

'ये क्या कर रही हो? '

'कमरा खाली कर दूँगी। '

'कहीं नहीं जाओगी। '

'किस हक से रोक रहे हैं? '

महेन्द्र चुप रह गए।और उसी चुप्पी में शायद प्रेम पहली बार जन्मा।उसके बाद तीनों साथ रहते हुए भी साथ नहीं रहे।कल्याणी अब भीतर-ही-भीतर बुझने लगी थी।लेकिन एक सच कोई नहीं जानता था।

उसका कैंसर लौट आया था।रिपोर्ट उसने महीनों पहले देख ली थी।उसने महेन्द्र को नहीं बताया। क्योंकि वह जानती थी,अब उसके बाद महेन्द्र अकेले रह जाएँगे।और शायद इसी डर में उसने एक अजीब खेल खेलना शुरू किया।वह खुद दोनों के बीच शक बोती रही।शायद इसलिए कि उसके जाने के बाद महेन्द्र बिल्कुल खाली न रह जाएँ।

एक सुबह स्नेहा चाय लेकर नीचे आई।कमरा खुला था।कल्याणी बिल्कुल शांत लेटी थी।जैसे बहुत दिनों बाद उसे नींद आई हो।तकिए के नीचे एक पत्र रखा था।महेन्द्र काँपते हाथों से पढ़ने लगे, 'मेरी मौत के लिए किसी को दोष मत देना।मैं थक गई थी।बीमारी से नहीं,इस डर से कि मेरे बाद तुम अकेले रह जाओगे। '

उनकी आँखें धुँधली हो गईं।पत्र में आगे लिखा था, ' 'मैंने ही शक का बीज बोया।पहले मुझे सचमुच डर लगा था कि कहीं स्नेहा तुम्हें मुझसे दूर न कर दे।फिर एक दिन समझ गई वह तुम्हें मुझसे दूर नहीं, मेरे बाद अकेलेपन से बचा सकती है। '

स्नेहा फूट-फूटकर रोने लगी।पत्र की आखिरी पंक्तियाँ थीं, 'महेन्द्र, मुझे माफ कर देना।और स्नेहा,अगर तुम्हारे दिल में उनके लिए जरा-सी भी जगह हो तो उन्हें अकेला मत छोड़ना।मैं हारना नहीं चाहती थी।इसलिए तुम्हें किसी और की बाँहों में धकेल दिया। '

तेरहवीं के बाद स्नेहा सामान बाँधने लगी।महेन्द्र ने धीमे स्वर में पूछा, ' 'तुम भी चली जाओगी? '

स्नेहा ने सिर झुका लिया।

'मैं रह गई तो लोग बातें करेंगे। '

बहुत देर तक कमरे में खामोशी रही।

फिर महेन्द्र बोले, 'और अगर वही बात सच हो चुकी हो तो? '

स्नेहा रो पड़ी।बालकनी में हवा चल रही थी।दीवार पर टंगी कल्याणी की तस्वीर मुस्कुरा रही थी। घर में अब भी तीन लोगों की उपस्थिति थी।बस उनमें से एक दिखाई नहीं देती थी।

राजकुमार कुम्भज की दो कविता?

हर दिन नया सूर्योदय

हर दिन नया सूर्योदय
ज़माने भर का बोझ है पीठ पर
मेरा ज़रा कुछ भी है नहीं इसमें
कुछ इसका है,कुछ उसका है
कुछ है ज्ञात-ज्ञात भी शायद
कि पता-ठिकाना तक याद नहीं
छाले हैं पैरों में वक़्त ने दिए जो
सीमा हाथों की संकुचित करता है वही
सोचता हूँ कि लड़ना-झगड़ना
किस किससे और क्यों
जबकि क़िश्तों में,क़िस्सों में
बँट गई है ज़िंदगी
भूल गया हूँ वाक़ई भूल गया हूँ मैं
कि खुली पीठ हूँ किसकी
किसकी है ज़िम्मेदारी मुझ पर
हर दिन नया सितम,हर दिन नया ज़ख़्म
हर दिन नये ऑसू हैं अगर मेरे लिए
तो है कहीं थोड़ी ख़ुशी भी
जिसे ढूँढ़ता ही रहता हूँ मैं अक्सर
अपनी आधी-अधूरी कविताओं में
और यही-यही समझते हुए कि जैसे
हर दिन नया सूर्योदय.

एक आदमी था,एक दृश्य था.

एक आदमी था,एक दृश्य था
दृश्य था,दृश्य में अदृश्य था बहुत कुछ
बहुत कुछ अदृश्य में एक अजीब दृश्य था
अजीब दृश्य में एक अजीब आदमी था
अजीब आदमी,अदृश्य में दहाड़ता था
अदृश्य था,आदमी था,दहाड़ता था
चीख़ता,चिल्लाता और डकारता था
उसकी चीख़ें,चिल्लाहटें और डकारें
सर्वदा गूँजती रहतीं थीं दृश्य में
कहने को कहा जाता था यही-यही
कि दृश्य में सबसे अच्छे दिन थे
कि दृश्य में सबसे बुरे दिन थे
लोग हँसते थे कि रोते थे,पता नहीं
ज़रा भी किसी को पता नहीं होने देते थे
शायद हँसते-हँसते रोते थे,पता नहीं
शायद रोते-रोते हँसते थे,पता नहीं
यही एक अजीब कहानी थी अदृश्य में
जिसे दोहराती थी कविता दृश्य में
दृश्य था,दृश्य में अदृश्य था बहुत कुछ
एक आदमी था,एक दृश्य था.

भूमध्य रेखा

लघुकथा

ब्रजेश कानूनगो

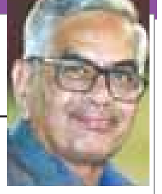

प्रभुदयालजी का समूचा सेवाकाल क्रोध से भरा हुआ निकला था। किसी भी बात या विचार को वे सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे। तुरंत प्रतिक्रिया देते, बहस करते और बड़ी मुश्किल से संतुष्ट हो पाते थे। इस प्रक्रिया में उनका व्यक्तित्व और व्यवहार भी बुरी तरह प्रभावित होता गया था। ऐसा लगता जैसे गुस्सा और बैचेनी उनका एक स्थायी भाव हो, उनकी भावभंगिमा से ऐसा ही सामान्यतौर से महसूस भी होता था। जब तक शरीर और मन शक्ति से भरा था उनका जीवन जैसे तैसे कट ही गया लेकिन सेवानिवृत्ति के बाद यही स्वभाव उनकी बीमारी का बड़ा कारण बनता गया। दिनभर टीवी पर खबरिया चैनलों की उत्तेजक बहसों को देखते हुए परेशान होते रहते। भिन्न विचारधाराओं वाले प्रवक्ताओं के तर्कों और कुतर्कों से वे बहुत प्रभावित और उद्वेलित हो जाते। यह देखकर वे बहुत दुखी होते कि कोई दाएं की बात करता है तो कोई बाएं की। इसका सीधा असर उनके स्वास्थ्य पर पड़ने लगा। गहरे अवसाद और निराशा से उनका जीवन रसहीन होता गया।

अंततः उन्होंने टीवी पर उत्तेजक खबरिया बहसों को देखना बंद कर दिया। समय काटने को उन्होंने यूट्यूब पर विश्व यात्रियों के वीडियो देखना शुरू करके दुनिया को जानने समझने का नया विकल्प तलाश लिया। लेकिन उनका स्वभाव कैसे बदल सकता था, लोगों के विचारों से सहमत होने में अब भी बड़ी कठिनाई आती थी, उनके भीतर संताप बना ही रहता था।

एक ट्रेवलर के यूट्यूब वीडियो में जब प्रभुदयालजी ने भूमध्य रेखा पर युगांडा के एक पर्यटन स्थल पर एक दिलचस्प प्रदर्शन देखा तो हतप्रभ रह गए। युगांडा में भूमध्य रेखा पर एक प्रसिद्ध टूरिस्टिक प्वाइंट है, जिसे 'इक्वेटर लाइन' कहा जाता है। इस स्थान पर क्रमशः भूमध्य रेखा के दाहिने तरफ एक पात्र, एक पात्र ठीक भूमध्य रेखा पर तथा एक अन्य पात्र बाईं ओर रखा है। इन पात्रों में जब पानी के बीच फूल को रखा जाता है तो वह भूमध्य रेखा के पात्र में स्थिर रहता है लेकिन अन्य दोनों पात्रों में उसके घूमने की दिशा बिल्कुल विपरीत हो जाती है।

इस प्रयोग में पृथ्वी की घूर्णन गति के प्रभाव से उत्पन्न कोरिओलिस बल पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में दाईं ओर तथा दक्षिणी गोलार्ध में बाईं ओर कार्य करता है। जबकि भूमध्य रेखा पर, कॉरिओलिस बल शून्य होता है। इसी वजह से उत्तरी गोलार्ध में, फूल दाईं ओर घूमने लगता है, जबकि दक्षिणी गोलार्ध में, वह बाईं ओर घूमने लगता है। प्रभुदयालजी को अनायास इस वीडियो को देखते हुए जीवन में पुनः आनंद की वापसी का रास्ता दिखाई दे गया। मन ही मन सोचने लगे, जब समूची पृथ्वी भूमध्य रेखा के दोनों ओर अलग अलग तरह से व्यवहार करती है, अलग अलग दिशाओं में हवाएं बहती हैं, अलग अलग बल काम करते हैं तब भी पृथ्वी संतुलित है, उसका चक्र सहजता से कायम है तो फिर उनके लिए क्या मुश्किल हो सकती है। उन्होंने अपने मस्तिष्क में पहुंचने वाले भिन्न विचारों के विपरीत बलों के प्रभाव से व्यथित होने की बजाए भूमध्यरेखीय स्थिति को बनाए रखने का अभ्यास शुरू कर दिया। उनके जीवन में प्रसन्नता के फूल फिर से खिलने लगे।

सूरज का क़हर

रामेश्वरम तिवारी

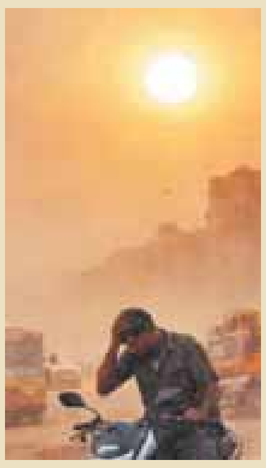

सूरज क़हर बरपा रहा है,
तेवर अपने दिखा रहा है।

ज़मीं का जिगर फट रहा,
सरोवर सूखा जा रहा है।

सुब्ह से शाम तक मज़दूर,
बगैर पानी के नहा रहा है।

कृषक खेत को जोत रहा,
स्वेद अपना बहा रहा है।

दीन दुबला हुआ जा रहा,
धनी ऐश फ़रमा रहा है।

चरवाहे द्वारा तरुवर-तले,
आल्हा गाया जा रहा है।

लीपापोती कला के क्या कहने

व्यंग्य

दिनेश विजयवर्गीय

लेखक व्यंग्यकार हैं।

युवा पत्रकार मुंशी एक सप्ताह बाद आज घर पर आया। वह अपने हाथ में समाचार पत्र लेकर लीपापोती लीपापोती बोलता आया। मैंने कहा मुंशी यह क्या लीपापोती लीपा पोती कहे जा रहे हो? इतने दिनों बाद आज कोई विशेष समाचार लेकर आए हो कया ? तुम्हारी आदत पहेलियां बुझाने की है। सीधे-सीधे अपनी बात क्यों नहीं कर देते ? अंकल !आप यह बताएं कि हमारे देश में लीपापोती की परंपरा कब से चल रही है ? जो आज भी यह दोषी व्यक्ति की लापरवाही व गलतियां छुपाने में सहयोगी बनी हुई है। मुंशी! देश में लीपापोती की परंपरा कब से चल रही है, इसके बारे में कुछ कह नहीं सकते। पर हां यह हमारी त्योहारी परंपरा में वर्षों वर्षों से चल रही है । देश में दीपावली के अवसर पर गांव के कच्चे घरों में सीलन से उखड़े मिट्टी के प्लास्टर को मिट्टी गोबर से लीपकर नया लुक दिया जाता है। फिर मांडने मांड कर आकर्षक रूप देकर घर को सुसजिजत रुप किया जाता है। शायद आज लोगों ने इसी लीपापोती की विशेषताओं को अपने हित और स्वार्थ साधने में उपयोग लेने लगे हैं । इसके चलते किंतु परंतु ऐसा है वैसा है ,आगे से ध्यान रखेंगे, जैसे- शब्दों की लापरवाही का सहारा लेकर अपनी गलतियों को ढकने का काम करते हैं । लीपापोती की क्षमता इतनी प्रभावी होती है कि वह नियम कानून में भी गली निकाल दोषी को बचा लेती हैं।

अभी हाल ही में कुछ लोग जबलपुर के नर्मदा नदी के क्रूज नौका विहार में रोमांच का आनंद ले रहे थे। तभी अचानक तेज हवाओं के चलते क्रूज पलटी मार गया। उसमें बैठे लोगों ने सेफ जैकेट भी तभी पहनी जब तेज हवाएं शुरू हुई और संतुलन बिगड़ने लगा। संचालक ने पहले जैकेट पहनने के संभावित मौसम का ध्यान हीं रखा। तूफानी हवाओं के चलते क्रूज में पानी भरने लगा और डूबने लगा। लोग अपनी जान बचाने का जतन करने लगे। कुछ को मौत ने गले लगा लिया। एक मां भी अपने बच्चे के साथ उसमें बेठी थी। जान बचाने के फेर में मां ने बच्चे को अपनी बाहों में जकड़ लिया। पर उनके भाग्य में साथ नहीं दिया। और इस अप्रिय हादसे मां बेटे भी काल के गाल में समा गए । कितना हृदय विदारक दृश्य देख लोग मां की ममता पर बातें करने लगे। बच्चे के लिए मां से बड़ा कोई नहीं है। हादसे के बाद कुरेत कुरेत कर सिस्टम की कमियां निकालने लगे। संचालक की कमियां उजागर होने लगीं। दुर्घटना में बात मंत्री जी ने सदैव की परंपरागत का निर्वाह करते हुए कहा दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। जान गंवाने वालों को मुआवजा देकर उनके प्रति सहानुभूति प्रकट की जाएगी। कुछ समय बाद सब बातें ठंडे बस्ते में चली जाएंगी और सभी पर लीपापोती शुरू हो जायेगी । जो दुनिया छोड़ गया वह उनकी किस्मत । उनकी जिंदगी इतनी ही लिखी थी। शायद यही सोच लोगों में बना रहता है और चुप्पी साध लेते हैं। गुजरते समय के कई हादसों की परंपरा की तरह लीपापोती कला से धीरे-धीरे सब कुछ भुला दिया जाएगा। सच में लीपापोती कला तेरे क्या कहने !

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस तरह 'आदमी' जीवन-सत्य की संवेदनात्मक खोज

पुस्तक समीक्षा

डॉ. रमेश चन्द मीणा

समीक्षक

राष्ट्र समकालीन हिंदी कविता में ऐसे काव्य-संग्रह कम ही मिलते हैं जो पाठक को केवल शब्दों का रसास्वादन कराने तक सीमित न रखकर उसे आत्मबोध की यात्रा पर भी ले जाएँ। विवेक कुमार मिश्र का नवीन कविता-संग्रह 'इस तरह आदमी' इसी अर्थ में एक उल्लेखनीय कृति है। वेरा प्रकाशन, जयपुर से प्रकाशित यह संग्रह अपने शीर्षक से ही संकेत देता है कि यहाँ 'आदमी' केवल एक सामाजिक प्राणी नहीं, बल्कि अनुभवों, संवेदनाओं और अस्तित्वगत प्रश्नों का केंद्र है।

इस संग्रह में संकलित 80 कविताएँ एक सुसंगठित भाव-यात्रा का निर्माण करती हैं। इन कविताओं की विशेषता यह है कि वे किसी बाहरी घटनाक्रम से अधिक भीतर की हलचलों को स्वर देती हैं। कवि 'आदमी' से आरंभ करता है, उसे संसार के विविध आयामों से जोड़ता है और अंततः उसी आदमी के भीतर लौट आता है। यह आवर्तन ही इस संग्रह का दार्शनिक आधार है—मानो जीवन का समस्त विस्तार अंततः मनुष्य के भीतर ही सिमट आता हो।

कवि की भाषा इस संग्रह की सबसे बड़ी शक्ति है। यह भाषा न तो जटिल बौद्धिकता का बोझ उठाती है और न ही कृत्रिम अलंकरणों का सहारा लेती है। सहज, सरल और आत्मीय शैली में लिखी गई ये कविताएँ पाठक के मन में बिना किसी बाधा के प्रवेश करती हैं। ऐसा लगता है जैसे कवि कोई गूढ़ सत्य नहीं सुना रहा, बल्कि हमारे भीतर पहले से मौजूद अनुभूतियों को शब्द दे रहा है। इसीलिए संग्रह की कविताएँ 'आत्मलिपि' की तरह प्रतीत होती हैं—जिनमें कवि का जीवन ही नहीं, पाठक का अपना जीवन भी प्रतिबिंबित होता है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से यह संग्रह अत्यंत व्यापक है। इसमें मनुष्य के अस्तित्व, उसके संघर्ष, प्रेम, पीड़ा, अकेलेपन, आशा और विश्वास जैसे अनेक आयामों को स्पर्श किया गया है। 'खुशी का पत्थर', 'धूसर रंग', 'आदमी को आदमी रहने दें', 'यात्रा एक खोज है', 'विश्वास ही आखिरी रास्ता है' जैसी कविताएँ जीवन के सामान्य अनुभवों को असामान्य संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत करती हैं। इन कविताओं में कहीं भी उपदेशात्मकता नहीं है; बल्कि वे अनुभवों के माध्यम से पाठक को स्वयं सोचने और समझने के लिए प्रेरित करती हैं।

इस संग्रह का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसका दार्शनिक स्वर है। कवि जीवन के जटिल प्रश्नों को सरल भाषा में व्यक्त करता है। वह अस्तित्व, सत्य, और

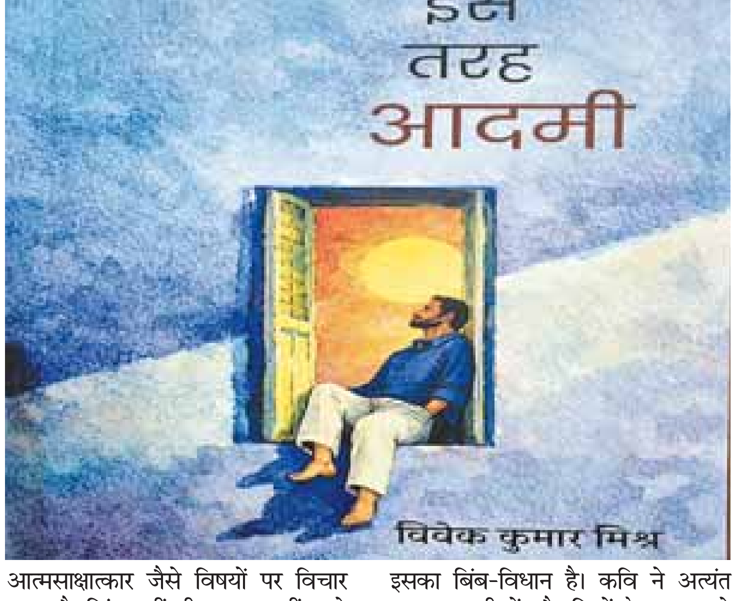

आत्मसाक्षात्कार जैसे विषयों पर विचार करता है, किंतु कहीं भी दुरूहता नहीं आने देता। 'कहीं कोई मुक्त होता', 'यथार्थ काफी नहीं है', 'अस्तित्व की कथा' जैसी कविताएँ इस दृष्टि से विशेष उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में कवि जीवन की अनिश्चितताओं को स्वीकार करता है और इसी स्वीकार में एक प्रकार की मुक्ति का बोध कराता है।

काव्य-संग्रह का एक और सशक्त पक्ष इसका बिंब-विधान है। कवि ने अत्यंत साधारण प्रतीकों और चित्रों के माध्यम से गहन अर्थों की सृष्टि की है। 'कागज कोरे नहीं होते' जैसे शीर्षक ही अपने आप में एक गहरी संवेदना को प्रकट करते हैं। इन बिंबों की विशेषता यह है कि वे पाठक के अनुभव से जुड़े होते हैं, इसलिए वे सहज ही उसके मन में उतर जाते हैं। यह बिंब-विधान कविताओं को स्मरणीय बनाता है।

मानवीय संवेदनाओं की प्रस्तुति में कवि की दृष्टि अत्यंत उदार और मानवीय है। वह आदमी को उसकी समग्रता में देखने का आग्रह करता है—उसकी कमजोरियों, संघर्षों और संभावनाओं सहित। 'आदमी को आदमी रहने दें' जैसी कविताएँ आज के समय में विशेष प्रासंगिक हैं, जब मनुष्य अपने मूल मानवीय गुणों से दूर होता जा रहा है। कवि यहाँ किसी आदर्श की स्थापना नहीं करता, बल्कि मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप में स्वीकार करने की बात करता है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'इस तरह आदमी' एक ऐसा काव्य-संग्रह है, जो अपने सरल रूप में गहन जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह पाठक को बाहरी दुनिया से अधिक अपने भीतर झाँकने के लिए प्रेरित करता है। विवेक कुमार मिश्र ने इस संग्रह के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि सच्ची कविता वही है जो मनुष्य को उसके अपने अस्तित्व से जोड़ सके।

यह पुस्तक उन पाठकों के लिए विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है जो कविता में केवल शब्दों की सजावट नहीं, बल्कि जीवन का सार तलाशते हैं। इसे पढ़ते हुए पाठक स्वयं से संवाद करने लगता है और यही इस संग्रह की पहचान है।

पुस्तक –इस तरह आदमी
कवि– विवेक कुमार मिश्र
प्रकाशन–वेरा प्रकाशन, जयपुर
मूल्य– 250

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

भारत में विज्ञापन- भूमिका एवं उसकी उपयोगिता

लोग जिस पर विश्वास करते हैं, उसके कहे हर बातों को आँख बंद करके मान लेते हैं, जिसका फायदा विज्ञापन के निर्माण में लगे लोग लेते हैं। ऐसा लगने लगा है कि आज विज्ञापन की मायावी दुनिया ही तय करती है कि उपभोक्ता को बाजार से कब और क्या खरीदना है। वैसे खरीदना न खरीदना तो ग्राहक के मन की ही बात है पर विज्ञापन के मायावी प्रकोप का असर कहें कि अधिकांश लोग इसके जाल में फँस ही जाते हैं। बाकी रही-सही कसर पूरी कर देती है आस-पास की दुनिया। दुनिया संचार माध्यमों पर इतनी निर्भर हो गई है कि, खुद भी सोच सकती है, वहाँ तक सोच ही नहीं पाती। सामान के विक्री पर उत्पादन की अपनी विशेषता तो होती ही है पर विशेष असर विज्ञापन का ही होता है। वैसे अगर विज्ञापन के मुख्य कार्य को देखा जाय तो ग्राहकों को वस्तुओं से परिचय करवाना, उसके विशेषताओं से लोगों को रूबरू करवाना होता है। जिसके लिए पूरी टीम अपने-अपने स्तर पर जी जान से लगी होती है जहाँ नित नवीन खोज हेतु सपनों का आसमान बसता है।

बार-बार दोहराव के बल पर असत्य को भी सत्य साबित करने का पहल लगभग चल निकला है। हालांकि सभी बातें असत्य हो ऐसा भी नहीं है पर विज्ञापन में अधिकांशतः उपभोक्ता को बहलाने हेतु बड़े-बड़े लालची तीर चलाए जाने लगे हैं। लोग जिस पर विश्वास करते हैं, उसके कहे हर बातों को आँख बंद करके मान लेते हैं, जिसका फायदा विज्ञापन के निर्माण में लगे लोग लेते हैं। ऐसा लगने लगा है कि आज विज्ञापन की मायावी दुनिया ही तय करती है कि उपभोक्ता को बाजार से कब और क्या खरीदना है। वैसे खरीदना न खरीदना तो ग्राहक के मन की ही बात है पर विज्ञापन के मायावी प्रकोप का असर कहें कि अधिकांश लोग इसके जाल में फँस ही जाते हैं। बाकी रही-सही कसर पूरी कर देती है आस-पास की दुनिया। दुनिया संचार माध्यमों पर इतनी निर्भर हो गई है कि, खुद भी सोच सकती है, वहाँ तक सोच ही नहीं पाती। सामान के विक्री पर उत्पादन की अपनी विशेषता तो होती ही है पर विशेष असर विज्ञापन का ही होता है। वैसे अगर विज्ञापन के मुख्य कार्य को देखा जाय तो ग्राहकों को वस्तुओं से परिचय करवाना, उसके विशेषताओं से लोगों को रूबरू करवाना होता है। जिसके लिए पूरी टीम अपने-अपने स्तर पर जी जान से लगी होती है जहाँ नित नवीन खोज हेतु सपनों का आसमान बसता है। विज्ञापन वस्तुओं के विक्रय की कला है। विज्ञापन वि तथा ज्ञापन शब्दों के मेल से बना है जिसका अर्थ क्रमशः विशिष्ट एवं सूचना है। किसी भी वस्तु के बारे में विशिष्ट सूचना उपभोक्ता तक विशेष तरीके से पहुँचाना ही विज्ञापन है। उत्पाद एवं उपभोक्ता के बीच सेतु के रूप में विज्ञापन कार्य करता है पर वही सेतु कभी-कभी रास्ता भटकाने का कार्य करता है बल्कि आज का अधिकतर विज्ञापन ऐसा ही है।

विस्टन चर्चिल ने विज्ञापन के बारे में गजब कहा है। उनका कहना है कि टकसाल के अतिरिक्त कोई भी बिना विज्ञापन के मुद्रा का उत्पादन नहीं कर सकता।

आज जब सब कुछ हवा में ही तय होता है, हवा के इस दौर में भी विज्ञापन ही सब कुछ है। उत्पादक विज्ञापन पर खर्च करने में जरा सा भी नहीं हिचकते। बात विज्ञापन और कला की करें तो कलाकार निरंतर प्रयास से उत्पादक के द्वारा किए गए दावे को ध्यान में रखते हुए ऐसे दृश्य तैयार करता है कि ग्राहक वस्तु के प्राप्ति हेतु लहालोट हो उठे। कलाकार के कल्पना का ही कमाल होता है कि जरूरत न होने के बावजूद भी लोग सामानों को मंगाने लगते हैं। 'भारी उत्पादन का कारण एवं परिणाम विज्ञापन है' नाइट्रोम के इस कथन ने विज्ञापन को बाकायदा बयां कर दिया है। समय ही ऐसा है कि सुबह से लेकर शाम तक कई रूपों में विज्ञापन हमारे सामने होता है और हम लाख चाहकर भी इससे बच नहीं सकते। अखबार पलटते ही विज्ञापन, टीवी देखते ही विज्ञापन, रेडियो सुनते ही विज्ञापन, यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टा हर जगह विज्ञापन की दुनिया से हम घिरे हुए हैं। बाहर निकलते ही होर्डिंग्स, बैनर, पोस्टर आदि हमें ललचाने लगते हैं। मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी विज्ञापन हमारे भावनाओं से खेलते हैं। इन सभी के पीछे जो टीम कार्य करती है उसे विज्ञापन एजेंसी कहा जाता है जहाँ इससे संबंधित सभी विषय के विशेषज्ञ बैठते हैं। उपभोक्ताओं के नब्ज़ को टटोलने वाले मनोवैज्ञानिक, कॉपी राइटर, क्रियात्मक रुप से संपन्न मझे हुए कलाकारों, चित्रकारों, भाषा के जानकारों का जमावड़ा होता है यहाँ। इतने सुनियोजित तरीके से किए कार्य को कोई इग्नोर कैसे कर सकता है भला। विज्ञापन के विश्वसनीयता पर बहस भी हमेशा होती रही है। जबरदस्त आलोचना से होकर कई बार गुजरना पड़ा है इसे। कटु अनुभवों से भी पाला पड़ता रहा है लेकिन तमाम जद्दोजहद के बावजूद विज्ञापन के अस्तित्व को नकारा नहीं जा सकता। विज्ञापन हमेशा से हमारे बीच रहा है। विज्ञापन हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। ललित कला एवं उपयोगी कला में उपयोगी कला के अंतर्गत आता है उपयोगी कलाकार, जिसका कार्य ही होता है ऐसे चित्रों का निर्माण करना जो लोगों के उपयोग में आ सके और फिर वो विज्ञापनदाता भी हो सकता है और ग्राहक भी। एक को बेचने की आवश्यकता है तो दूसरे को खरीदने की, फायदा दोनों का है। कलाकार या फिर पूरी एजेंसी बस पुल के रूप में दोनों को एक दूसरे तक पहुँचाने का कार्य करती है। कभी-कभी भ्रामक विज्ञापन भी सामने आ जाते हैं जिससे ग्राहकों का विश्वास विज्ञापन से उठ जाता है। अतः नैतिक एवं अनैतिक का दायरा यहाँ भी होना चाहिए। विज्ञापनदाता को चाहिए कि वही विशेषता एजेंसी को बताए जो वाकई उत्पाद में हो तथा विज्ञापन एजेंसी को अपने कार्य संपादित करने से पूर्व सभी बातों पर गहनता से विचार करते हुए विज्ञापनदाता के कहे हर बातों को जाँच लेने के बाद ही विज्ञापन का निर्माण करना चाहिए ताकि ग्राहक खुद को ठगा हुआ महसूस ना करे। विज्ञापन दबी, छिपी इच्छाओं को आकाश प्रदान करने का भी कार्य करता है। विज्ञापनों को ऐसे तैयार किया जाता है कि विज्ञापित उत्पाद का यदि आपने प्रयोग नहीं किया तो आप बहुत पीछे हो जायेंगे, ऐसा महसूस होता है उपभोक्ता को। 'अगर ये नहीं पहना तो समझो आज तक आपने कुछ नहीं पहना' जैसे शब्दों का इस्तेमाल धड़ल्ले से किया जा रहा है या यूँ कहें कि मन के किसी कोने में दबी इच्छाओं को ललकारने का कार्य भी विज्ञापन का ही है और सामान्य इंसान में भी समाज के अन्य से होड़ की पिपासा जगा देती है विज्ञापन फलत- जिसकी आवश्यकता इंसान को नहीं भी है उसे भी देखा-देखी में खरीद लिया जाता है। आज का बाजार ही विज्ञापन के भरोसे है। कुछ विज्ञापन पुरूषों, महिलाओं एवं बच्चों हेतु अलग-अलग भी बनाए जाते हैं। परिवार में रिश्तों के महत्व को देखते हुए उन्हें यह भी अंदाजा होता है कि जिस सामान के लिए बच्चा बोल देगा पिता जरूर दिलाएगा इसलिए अलग-अलग किस्म और उम्र हेतु भी विज्ञापन तैयार किया जाता है। बाइक के विज्ञापन को इस तरीके से डिजाइन किया जाता है कि उस पर बैठने वाला खुद को समाज से अलग और चुस्त-दुरुस्त समझ बैठता है बाकी में हीन भावना जागृत हो इसका भी ध्यान रखा जाता है ताकि वो भी जल्दी से इसे खरीद कर अपने श्रेणी में बढ़ोत्तरी करते हुए एक सीढ़ी आगे बढ़ सके और विज्ञापन का कार्य भी पूरा हो सके।

मानहानि

विष्णु बैरागी

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी को क्यों नहीं सूझी यह बात?

दुर्घटना की कानूनी खानापूर्ति से निपटने के बाद कारखानेदार ने बुरी तरह से नाराज होते हुए, एक तरह से मेरी पेशी ही ले ली। मैंने खबर छापने को मेरा-अपना फैसला बताया। अपने सेठ का हवाला बिलकुल नहीं दिया। उसने विज्ञापन बन्द करने और 'देख लेने' की धमकी दी। महानगरों के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की कोई वकत नहीं होती। लेकिन जिला मुख्यालय स्तर के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की अनदेखी, फौरन तो नहीं हो पाती। सो दो-एक दिन मैं थोड़े तनाव में रहा। लेकिन उसके बाद जब कहीं, कोई हलचल नहीं हुई तो मैं बेफिकर हो गया। इतना कि सारी बात भूल ही गया।

अब ठीक-ठीक सन्-सम्वत तो याद नहीं, शायद 1975-77 की बात होगी। मैं मन्दसौर में दैनिक 'दशपुर-दर्शन' का सम्पादक था। सब कुछ ठीक ही ठीक चल रहा था कि अचानक ही, मझौले स्तर के एक कारखानेदार से उलझन हो गई। वह हमारा विज्ञापनदाता भी था और मेरे सेठ का मिलनेवाला भी। उसके कारखाने में दुर्घटना हो गई। दो लोग गम्भीर घायल हो गए। वह चाहता था कि खबर हमारे अखबार में न छपे। संयोग ही रहा कि उसकी चाहत मुझ तक पहुँचती उससे पहले ही मेरे सेठ और मेरे बीच इस खबर पर बात हो चुकी थी। तय हो गया था कि खबर छपेगी। खबर छपी। केवल हमारे अखबार में ही नहीं, मन्दसौर-इन्दौर के सारे अखबारों में छपी। हम नहीं छापते तो हमें मुँह छिपाने की जगह नहीं ही मिलती। मुझे और मेरे सेठ को खुश तो हुई ही, तसल्ली भी हुई।

दुर्घटना की कानूनी खानापूर्ति से निपटने के बाद कारखानेदार ने बुरी तरह से नाराज होते हुए, एक तरह से मेरी पेशी ही ले ली। मैंने खबर छापने को मेरा-अपना फैसला बताया। अपने सेठ का हवाला बिलकुल नहीं दिया। उसने विज्ञापन बन्द करने और 'देख लेने' की धमकी दी। महानगरों के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की कोई वकत नहीं होती। लेकिन जिला मुख्यालय स्तर के अखबारों की दुनिया में ऐसी धमकियों की अनदेखी, फौरन तो नहीं हो पाती। सो दो-एक दिन मैं थोड़े तनाव में रहा। लेकिन उसके बाद जब कहीं, कोई हलचल नहीं हुई तो मैं बेफिकर हो गया। इतना कि सारी बात भूल ही गया।

कोई महीना भर बाद मुझे जिला कोर्ट में जाना पडा तो एक परिचित वकील साहब मेरी बाँह पकड़कर एक ओर ले गए और पूरा किस्सा सुनाया।

मैं जरूर सारी बात भूल गया था लेकिन कारखानेदार ने बात गाँठ बाँध ली थी। जिन वकील साहब ने मुझे किस्सा सुनाया वे उस कारखानेदार के स्थायी वकील थे। दुर्घटना के करीब पखवाड़े भर बाद वह कारखानेदार वकील साहब के पास गया और मुझ पर और हमारे अखबार पर मानहानि का मुकदमा दायर करने की बात कही।

वकील साहब ने मुझे बताया कि उन्होंने पूरी बात सुनी और अपने 'मालदार आसामी' को सलाह दी - 'देखो सेठ! मैं तो तुम्हारा वकील हूँ। जैसा तुम कहोगे, मुकदमा दायर कर दूँगा। मेरा तो काम ही यही है। मुझे मेरी मुँह-माँगी फीस मिल जाएगी। लेकिन मेरी सलाह है कि तुम इस मुकदमे की बात दिमाग से निकाल दो।' सेठ हैरत में पड़ गया। कोई वकील मुकदमा दायर न करने की सलाह दे रहा है! वकील साहब ने समझाया - 'अभी तो केवल यही छपा है कि तुम्हारे कारखाने में दो मजदूर गम्भीर घायल हुए हैं। कारखाने के अन्दर की हालत और सुरक्षा इन्तजामात के बारे में कुछ नहीं छपा। अभी तो तुम्हारी पगड़ी भी नहीं हिली है। लेकिन यदि तुमने मानहानि का मुकदमा दायर कर दिया तो भरी कोर्ट में तुम्हारे कपड़े उतर जाएँगे और वो भी खुद तुम्हारे हाथों से। वो-वो जानकारियाँ, वो-वो बातें सामने आ जाएँगी कि कारखानेका लायसेंस केंसल होने की नौबत न आ जाए।'

वकील साहब ने कहा - 'जिस गुस्से में वो आया था उसे देखकर मुझे बिलकुल उम्मीद नहीं थी कि वो मेरी बात मान जाएगा। लेकिन भगवान ने उसे सद्बुद्धि दी। उसे मेरी बात की गम्भीरता महसूस हो गई और चुपचाप चला गया।'

दिल्ली उच्च न्यायालय की न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ता शर्मा के ताजा फैसले ने मुझे यह किस्सा याद दिला दिया। वे अरविन्द केजरीवाल के विरुद्ध मुकदमा सुन रही थीं और केजरीवाल ने उनकी निष्पक्षता पर सन्देह करते हुए माँग की थी कि वे इस मामले की सुनवाई से हट जाएँ। न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ता शर्मा ने केजरीवाल की माँग शुरू में तो ठुकरा दी थी। लेकिन अन्ततः उन्होंने हटने का फैसला कर लिया। लेकिन वे यहीं नहीं रुकीं। उन्होंने कहा कि वे केजरीवाल और मुकदमे में उनके अन्य सथियों के विरुद्ध मानहानि का आपराधिक मुकदमा दर्ज करेंगी। यह जानकर ही मुझे हैरत के साथ मेरेवाला यह किस्सा याद आ गया।

अब तक तो केजरीवाल उनके सामने याची/वादी या कि प्रार्थी थे। न्यायालय, न्यायाधीश और न्यायपालिका के प्रति सम्मान बरतने की विवशता के अधीन वे बहुत सारी बातें कह नहीं पाए होंगे। लेकिन यदि न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी ने मुकदमा दायर कर दिया तो वे 'न्यायमूर्ति' न रहकर याची/वादी या कि प्रार्थी की हैसियत में कोर्ट के सामने होंगी। तब केजरीवाल उनके प्रतिवादी होंगे। याने, वे केजरीवाल को अपने बराबर की हैसियत में ला खड़ा कर देंगी। तब केजरीवाल उनसे वे बातें भी पूछेंगे जो स्वर्णकान्ताजी के न्यायमूर्ति होने की वजह से नहीं पूछ/कह पाए होंगे। सड़कछाप लोगों की जबान में कहें तो आँखों का लिहाज टूटेगा। काँदे के छिलके उतरने शुरु हो जाएँगे और उसके बाद बात कहाँ तक जाएगी, केवल सोचा ही जा सकता है।

मेरेवाले किस्से को करीब पचास बरस होने को आ रहे हैं। यह किस्सा लिखते हुए मैं सोच रहा हूँ - जिला कोर्ट के एक सामान्य वकील को जो बात, पचास बरस पहले सूझी थी, न्यायमूर्ति स्वर्णकान्ताजी को नहीं सूझी होगी?

वेब सिरीज़ समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

सपनों और हकीकत के बीच झूलती एक वेबसिरीज़

अमरीश वर्मा द्वारा लिखित और निर्देशित यह सिरीज़ इस बार केवल सपनों की बात नहीं करती है बल्कि उन सपनों को पाने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत पर भी सवाल उठाती है। यह एक ऐसी कहानी है जो जितनी प्रेरणादायक होने की कोशिश करती है, उतनी ही निराश और उद्वेग से भरने वाली भी है। दिल्ली की दबंग राजनीति और मुम्बई के अनिश्चित फिल्मी गलियारों की पृष्ठभूमि वाली यह सिरीज़ वास्तविकता के बेहद करीब रहने की कोशिश करती है, लेकिन बात वैसी बनती नहीं है जैसी अपेक्षित है। इस सीजन की कहानी के दो पक्ष हैं। एक तरफ जिम्मी मेहता (अमरीश वर्मा) है, जो दिल्ली के हालात में अपनी धाक जमाने की कोशिश कर रहा है। जिम्मी एक ऐसा युवक का है जो मानता है कि सफलता के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सब जायज है। वह रियल एस्टेट की दुनिया में खुद को बिकवाली का सर्वेसर्वा या यूँ कहें कि भगवान मानता है और अपने अहंकार को ही अपनी ढाल बनाता है। जिम्मी का मुख्य संघर्ष अपने चाचा कुकरेजा (विजयांत कोहली) से है। वह अपने चाचा की राजनीतिक और व्यावसायिक विरासत को ध्वस्त करने के लिए न केवल उनके घर के ठीक सामने एक इमारत खड़ी करता है, बल्कि उन्हें चिढ़ाने के लिए एक विवादित प्रतिमा भी लगा देता है। जिम्मी का पूरा जोर गुरुग्राम की राजनीति में अपना दबदबा बनाने पर है, लेकिन उसकी योजना में 'टोनी' (अभिषेक चौहान) की एण्ट्री सब कुछ बदल देती है। टोनी दिखने में सौम्य है, अन्दर से कहीं ज्यादा प्रतिशोधी और चालाक निकलता है।

सपनों का भी अपना एक संसार होता है। हम सभी सपने देखते हैं, कभी जागते हुए तो कभी सोते हुए। सपने हम सबकी ज़िन्दगी का एक अहम् हिस्सा होते हैं। सपनों को लेकर कुछ अहम् सवाल जिन पर अक्सर चर्चा होती है उनमें एक तो यह है कि क्या सपने सच होते हैं और क्या सपनों को साकार करने में भगवान की भी कोई भूमिका होती है? वीडियो इन डिमान्ड सेवा टीवीएफ एक बार फिर से सपनों और हकीकत की बीच झूलती कथावस्तु पर वेबसिरीज़ के एक नये सीज़न को लेकर आया है और इस वेबसिरीज़ का शीर्षक है - सपने वर्सेस एवरीवन - टू।

अमरीश वर्मा द्वारा लिखित और निर्देशित यह सिरीज़ इस बार केवल सपनों की बात नहीं करती है बल्कि उन सपनों को पाने के लिए चुकाई जाने वाली कीमत पर भी सवाल उठाती है। यह एक ऐसी कहानी है जो जितनी प्रेरणादायक होने की कोशिश करती है, उतनी ही निराश और उद्वेग से भरने वाली भी है। दिल्ली की दबंग राजनीति और मुम्बई के अनिश्चित फिल्मी गलियारों की पृष्ठभूमि वाली यह सिरीज़ वास्तविकता के बेहद करीब रहने की कोशिश करती है, लेकिन बात वैसी बनती नहीं है जैसी अपेक्षित है।

इस सीजन की कहानी के दो पक्ष हैं। एक तरफ जिम्मी मेहता (अमरीश वर्मा) है, जो दिल्ली के हालात में अपनी धाक जमाने की कोशिश कर रहा है। जिम्मी एक ऐसा युवक का है जो मानता है कि सफलता के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सब जायज है। वह रियल एस्टेट की दुनिया में खुद को बिकवाली का सर्वेसर्वा या यूँ कहें कि भगवान मानता है और अपने अहंकार को ही अपनी ढाल बनाता है। जिम्मी का मुख्य संघर्ष अपने चाचा कुकरेजा (विजयांत कोहली) से है। वह अपने चाचा की राजनीतिक और व्यावसायिक विरासत को ध्वस्त करने के लिए न केवल उनके घर के ठीक सामने एक इमारत खड़ी करता है, बल्कि उन्हें चिढ़ाने के लिए एक विवादित प्रतिमा भी लगा देता है। जिम्मी का पूरा जोर गुरुग्राम की राजनीति में अपना दबदबा बनाने पर है, लेकिन उसकी योजना में 'टोनी' (अभिषेक चौहान) की एण्ट्री सब कुछ बदल देती है। टोनी दिखने में सौम्य है, अन्दर से कहीं ज्यादा प्रतिशोधी और चालाक निकलता है। दूसरी तरफ जिम्मी का दोस्त प्रशांत (परमवीर सिंह चीमा) है, जिसका सपना अभिनय की दुनिया में नाम कमाना है।

अभिनय के मामले में सिरीज दमदार है। अमरीश वर्मा ने न केवल लेखन और निर्देशन की जिम्मेदारी संभाली है, बल्कि जिम्मी मेहता की भुमिका में उन्होंने शानदार अभिनय किया है। उनके अभिनय पर इमरान हाशमी की शैली का प्रभाव साफ झलकता है, फिर भी वे अपनी एक अलग पहचान बनिने में कामयाब रहे हैं। जिम्मी का सख्त मिज़ाज उसका आत्मविश्वास और अपमान का बदला लेने की उसकी तीव्र इच्छा को अमरीश ने पर्दे पर बहुत प्रभावशाली ढंग से उतारा है। परमवीर सिंह चीमा ने प्रशांत के रूप में अपने जटिल चरित्र को बेहतरीन सन्तुलन के साथ पेश किया है। एक स्ट्रगलर की हताशा, उसकी आँखों में चमकता सपना और दोस्तों के प्रति वफादारी चीमा ने इन सभी भावनाओं को बहुत ही सहजता से जिया है। उनके किरदार के माध्यम से दर्शक खुद को जोड़ पाते हैं, क्योंकि वह उन नैतिक दुविधाओं से गुजरता है जो हर आम इंसान के सामने आती हैं।

अमरीश वर्मा का निर्देशन इस सीजन में अधिक परिपक्व है। उन्होंने दिल्ली और मुम्बई की लय को पकड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। दिल्ली के दृश्यों में सत्तापक्ष का नाम और स्वैग दिखाई देता है तो मुम्बई के दृश्यों में एक तरह की घुटन और निरन्तर प्रतीक्षा है। लेखक के तौर पर अमरीश ने कहानी को एक प्रैग्मैटिक मोड़ दिया है। वे किसी जादुई हैप्पी एंडिंग के पीछे नहीं भागते, बल्कि यह दिखाते हैं कि असल जिन्दगी में जीत के साथ-साथ दिल टूटने और विश्वासघात की घटनाएं भी उतनी ही सामान्य होती हैं।

तकनीकी रूप से यह एक शानदार सिरीज है। सिनेमैटोग्राफी ने दोनों शहरों के अन्तर को रंगों और लाइटिंग के जरिए बहुत खूबसूरती से पेश किया है। दिल्ली के दृश्यों में शार्प कलर्स और खुलापन है, जबकि मुंबई के संघर्ष को तंग गलियों और कम रोशनी वाले कमरों के जरिए महसूस कराया गया है।बैकग्राउंड स्कोर सिरीज के मिजाज के अनुरूप है। यह कहानी की गंभीरता और तनाव को बढ़ाने में मदद करता है। एडिटिंग थोड़ी और चुस्त हो सकती थी, क्योंकि पाँच कड़ियों के इस शो में कुछ सीन काफी लम्बे खिंचे हुए लगते हैं, जो कहानी की गति को धीमा कर देते हैं। बावजूद इसके सिरीज का तकनीकी ढाँचा इसे एक प्रीमियम अनुभव बनाता है।

दीपक वोहरा जैसे वैश्विक व्यक्तित्व का आगमन जन परिषद के लिए गौरव का विषय: अरुण किलेदार

जन परिषद के वार्षिक उत्सव में पुलिस महानिदेशक, एयर मार्शल एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी भी होंगे शामिल

बैतूल। अग्रणी सामाजिक संस्था जन परिषद के वार्षिक उत्सव में दीपक वोहरा जैसे वैश्विक व्यक्तित्व का आगमन जन परिषद के लिए गौरव का विषय है। इस वर्ष आगामी 23 जून को भोपाल में जन परिषद का 37 वा वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। जिसमें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पूर्व राजनयिक व भारत सरकार के वरिष्ठ पूर्व राजदूत दीपक वोहरा की उपस्थिति आयोजन का मुख्य आकर्षण रहेगी। उन्होंने कार्यक्रम में आने की स्वीकृति दे दी है। उनके आगमन को लेकर जन परिषद के पदाधिकारियों एवं क्षेत्र के लोगों में उत्साह का वातावरण है। यह बातें जन परिषद के संरक्षक अरुण किलेदार ने कहीं। जन परिषद के वार्षिकोत्सव के संबंध में विस्तृत जानकारी देते हुए संरक्षक अरुण किलेदार एवं संभागीय उपाध्यक्ष मोहन अग्रवाल ने बताया कि दीपक वोहरा भारतीय विदेश सेवा के प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त राजनयिक रहे हैं। उन्होंने आर्मेनिया, जॉर्जिया, सूडान, दक्षिण सूडान एवं पोलैंड सहित कई देशों में भारत के राजदूत के रूप में अपनी महत्वपूर्ण सेवाएं दी हैं। इसके अलावा वे अंतरराष्ट्रीय संबंधों एवं रणनीतिक विषयों के विशेषज्ञ के रूप में भी अपनी पहचान रखते हैं। ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व की उपस्थिति से जन परिषद के वार्षिक उत्सव को नई पहचान एवं गरिमा प्राप्त होगी।

जन परिषद बैतूल चैप्टर के अध्यक्ष विजय दीक्षित ने बताया कि समारोह में मप्र के पुलिस महानिदेशक कैलाश मकवाना, एयर मार्शल प्रमोद श्रीवास्तव तथा मप्र शासन के एडिशनल चीफ सेक्रेटरी अनुपम राजन को भी आमंत्रित किया गया है। इन प्रतिष्ठित हस्तियों की उपस्थिति से समारोह को विशेष गरिमा प्राप्त होगी। जन परिषद के मीडिया प्रभारी संजय द्विवेदी ने बताया कि प्रतिवर्ष की परंपरा के अनुसार इस वर्ष भी समारोह में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त करने वाले व्यक्तित्वों को मंच पर सम्मानित किया जाएगा। गौरतलब है कि जन परिषद के कार्यक्रम के माध्यम से समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तित्वों को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है। जन परिषद के इंटर स्टेट कमेटी सचिव कैलाश प्रसाद अग्निहोत्री ने जनपरिषद अध्यक्ष एन.के. त्रिपाठी एवं संयोजक रामजी श्रीवास्तव के नेतृत्व एवं प्रयासों की सराहना करते कहा कि उनकी दूरदर्शिता एवं उत्कृष्ट आयोजन क्षमता के कारण ही इस स्तर का आयोजन संभव हो पा रहा है। उन्होंने आयोजन से जुड़े सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं एवं सहयोगियों को सफल आयोजन के लिए शुभकामनाएं देते हुए अधिक से अधिक लोगों से कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है।

प्रदेश में निरंतर सशक्त हो रही स्वास्थ्य सेवाएं: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

नवजात एवं मातृ स्वास्थ्य के क्षेत्र में मध्यप्रदेश ने की उल्लेखनीय प्रगति

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को निरंतर सशक्त एवं उन्नत बनाया जा रहा है। प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने के साथ ही उनकी सतत एवं सशक्त निगरानी सुनिश्चित की जा रही है, जिससे आमजन को गुणवत्तापूर्ण उपचार सुविधाएं समय पर उपलब्ध हो सकें। महिला एवं शिशु स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए राज्य सरकार द्वारा आधुनिक स्वास्थ्य अधोसंरचना, विशेषज्ञ चिकित्सा सेवाओं एवं प्रभावी मॉनिटरिंग तंत्र को मजबूत किया जा रहा है। इन प्रयासों से प्रदेश में नवजात एवं मातृ स्वास्थ्य संकेतकों में सतत सुधार दर्ज किया जा रहा है।

नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयों का सशक्त संचालन- राज्य में जन्म के समय कम वजन वाले, समय पूर्व जन्मे एवं जन्म के समय गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के बेहतर उपचार और नवजात मृत्यु दर में कमी लाने के उद्देश्य से नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयाँ (एसएनसीयू) प्रभावी रूप से संचालित की जा रही हैं। इन इकाइयों से नवजात शिशुओं को विशेषज्ञ उपचार, आधुनिक चिकित्सा उपकरण एवं प्रशिक्षित चिकित्सकीय देखरेख उपलब्ध कराई जा रही है।

उपचार एवं डिस्चार्ज दर में उल्लेखनीय वृद्धि- वर्ष 2024-25 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2025-26 में नवजात शिशु गहन चिकित्सा इकाइयों के प्रदर्शन में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। वर्ष 24-25 में जहाँ 1 लाख 29 हजार 212 नवजात शिशुओं को उपचार प्रदान किया गया था, वहीं वर्ष 25-26 में यह संख्या बढ़कर 1 लाख 34 हजार 410 तक पहुँच गई है। साथ ही नवजात शिशुओं की सफलतापूर्वक डिस्चार्ज दर भी अब तक के सर्वोत्तम स्तर 82.3 प्रतिशत पर पहुँच गई है। राज्य में संचालित 62 एसएनसीयू में इस वर्ष 1 अप्रैल से 15 मई 2026 तक कुल 15 हजार 54 नवजात शिशुओं को उपचारित किया गया, जिनमें से 12 हजार 818 नवजात शिशुओं को सफलतापूर्वक डिस्चार्ज किया गया। एसएनसीयू में 85.2 प्रतिशत डिस्चार्ज दर राष्ट्रीय औसत से अधिक दर्ज की गई है। इसके साथ ही लामा दर मात्र 2.12 प्रतिशत, रेफरल दर 4.2 प्रतिशत एवं मृत्यु दर 8.29 प्रतिशत रही, जो राष्ट्रीय औसत से कम है। यह उपलब्धि प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण नवजात चिकित्सा सेवाओं एवं प्रभावी उपचार प्रबंधन को दर्शाती है।

आधुनिक उपकरणों एवं विशेषज्ञ उपचार की उपलब्धता

राज्य सरकार गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के उपचार के लिये अत्याधुनिक एवं समर्पित स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य की एसएनसीयू इकाइयों में जटिल एवं गंभीर रूप से बीमार नवजात शिशुओं के उपचार के लिये वेंटिलेटर, सी-पैप, निर्बाध ऑक्सीजन, फोटोथेरेपी सहित आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित की गई है। साथ ही, फैसिलिटी बेस्ड न्यूबोर्न केयर (एफबीएनसी) में प्रशिक्षित चिकित्सकों एवं नर्सिंग ऑफिसर्स द्वारा वैज्ञानिक एवं गुणवत्तापूर्ण उपचार प्रदान किया जा रहा है। इन इकाइयों में भर्ती नवजात शिशुओं को आवश्यकता अनुसार वेंटिलेटर सपोर्ट, सी-पैप, फोटोथेरेपी एवं ऑक्सीजन सपोर्ट उपलब्ध कराया जा रहा है तथा एंटीबायोटिक के तार्किक उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। साथ ही सर्फ़ैक्टेंट एवं कैफीन साइट्रेट जैसी आधुनिक औषधियों के उपयोग से समय पूर्व जन्मे गंभीर नवजात शिशुओं का उपचार कर जीवन संरक्षित किया जा रहा है।

- **मातृ दुग्ध इकाई (सीएलएमसी) से नवजात शिशुओं को जीवनदायी पोषण-** प्रदेश सरकार नवजात शिशु को समय पर सुरक्षित एवं गुणवत्तापूर्ण पोषण उपलब्ध कराने के लिए सतत प्रयास कर रही है। कम वजन एवं बीमार नवजात शिशुओं को बेहतर पोषण एवं सुरक्षित उपचार उपलब्ध कराने के लिए मातृ दुग्ध इकाई से नवजातों को जीवनदायी पोषण दिया जा रहा है। वर्ष 2025-26 में इंदौर एवं भोपाल स्थित 2 क्रियाशील सीएलएमसी (कॉम्प्रेहेंसिव लैक्टेशन मैनेजमेंट सेंटर) इकाइयों के माध्यम से 1,031 स्वैच्छिक माताओं द्वारा 241.6 लीटर मातृ दुग्ध दान किया गया। दान किए गए इस मातृ दुग्ध को वैज्ञानिक प्रक्रिया के तहत सुरक्षित रूप से पाश्चुरीकृत कर 1,159 कमज़ोर एवं बीमार भर्ती नवजात शिशुओं को कुल 282.11 लीटर सुरक्षित दाता मातृ दुग्ध (डोनर ह्यूमन मिल्क) उपलब्ध कराया गया। यह पहल उन नवजात शिशुओं के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही है, जिन्हें जन्म के तुरंत बाद पर्याप्त मातृ दुग्ध उपलब्ध नहीं हो पाता। कॉम्प्रेहेंसिव लैक्टेशन मैनेजमेंट सेंटर की यह व्यवस्था नवजात शिशुओं को संक्रमण से सुरक्षा, बेहतर पोषण एवं स्वस्थ विकास सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।
- **नवजात स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने डिजिटल नवाचार ई-शिशु परियोजना से अब तक 9 हज़ार 889 शिशु लाभान्वित-** प्रदेश में नवजात स्वास्थ्य सेवाओं को और अधिक सुदृढ़ करने के लिये डिजिटल नवाचार के रूप में ई-शिशु परियोजना भी प्रभावी रूप से संचालित की जा रही है। दिसंबर 2025 से अब तक इस परियोजना के माध्यम से कुल 9,889 नवजात शिशु लाभान्वित हुए हैं। इंदौर एवं उज्जैन संभाग की 16 एसएनसीयू स्पोक इकाइयों में इस परियोजना के सकारात्मक परिणाम स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुए हैं, जहां औसत रेफरल दर 5 प्रतिशत से घटकर 4 प्रतिशत तथा मृत्यु दर 8 प्रतिशत से घटकर 6 प्रतिशत तक पहुंच गई है। यह परियोजना नवजात गहन चिकित्सा सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार, विशेषज्ञ मार्गदर्शन एवं समय पर उपचार सुनिश्चित करने में प्रभावी सिद्ध हो रही है।

धनौरा समूह नल-जल योजना के ट्रीटमेंट प्लांट का कलेक्टर ने किया निरीक्षण, पेयजल विस्तार योजना पर दिए निर्देश

बैतूल। कलेक्टर डॉ. सौरभ सोनवणे ने शुक्रवार को आठनेर विकासखंड के भ्रमण के दौरान धनौरा समूह नल-जल योजना के जल शुद्धिकरण संयंत्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता, पेयजल आपूर्ति व्यवस्था एवं भविष्य की विस्तार योजनाओं की विस्तृत जानकारी अधिकारियों से प्राप्त की। पीएचई विभाग के अधिकारियों ने बताया कि जल शुद्धिकरण प्लांट की क्षमता 3.76 एमएलडी है तथा वर्तमान में योजना के माध्यम से 22 ग्रामों को पेयजल उपलब्ध कराया जा रहा है। कलेक्टर डॉ सोनवणे ने ग्राम जावरा में पेयजल आपूर्ति की स्थिति के संबंध में जानकारी ली।अधिकारियों ने बताया कि ग्राम की जनसंख्या के अनुसार 55 एलपीसीडी मानक के तहत प्रतिदिन पेयजल प्रदाय किया जा रहा है। योजना का क्रियान्वयन वर्ष 2014-15 में किया गया था तथा वर्तमान में प्लांट पूर्ण क्षमता से संचालित हो रहा है। हालांकि, ग्रामों में जनसंख्या वृद्धि के कारण पानी की मांग लगातार बढ़ रही है। कलेक्टर ने अधिकारियों से पूछा कि प्लांट की क्षमता बढ़ाने के लिए क्या कार्ययोजना बनाई गई है तथा क्या इसे निर्गुण जलाशय से जोड़ा जा सकता है। साथ ही उन्होंने आठनेर विकासखंड के शेष ग्रामों को समूह नल-जल योजना से जोड़ने की संभावनाओं पर भी चर्चा की। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने जल परीक्षण प्रयोगशाला का भी अवलोकन किया। उन्होंने पानी की गुणवत्ता जांच की प्रक्रिया को देखा तथा एक सैंपल की टेस्टिंग का निरीक्षण किया। इसके साथ ही उन्होंने लैब में संधारित रिकॉर्ड का भी परीक्षण कर गुणवत्ता मानकों का पालन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

हापुस आम की सुगंध से महका प्रांगण

भोपाल। प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष 15 से 17 मई तक श्री दत्त मंदिर हॉल में अलफांसो/हापुस आम की प्रदर्शनी/विक्रय का उदघाटन वार्ड 45 की पार्षद शिखा गोहिल ने किया। इस अवसर पर विलास बुचके, रोहिणी शिंगवेकर, संजय जोशी, नीला करंबेलकर, उपासनी के साथ ही बड़ी संख्या में आम के शौकीन उपस्थित थे पार्षद शिखा गोहिल का स्वागत आयोजक भरत साठे व ज्योति साठे ने किया। अतिथियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। साथ ही रत्नागिरी, देवगढ़, कोंकण महाराष्ट्र के किसान भाइयों से संवाद साधा व आम की विशेषताओं को जाना। हापुसआम का स्वाद भी चखा।

उल्लेखनीय हे कि महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र में ही यह आम का उत्पादन होता हे ,इसे जीआई टैग भी प्राप्त है। हापुस आम की अब भारत के साथ पूरी दुनिया में मांग बढ़ने लगी है। भोपाल में इस प्रदर्शनी का आयोजन भरत साठे, ज्योति साठे विगत 3 वर्षों से करते आ रहे हैं। आज प्रदर्शनी का अंतिम दिन है। इस वर्ष भी 1500पेटी आम भोपाल में प्रदर्शनी में विक्रय हेतु आया है। पहले दिन ही आम लेने वाले की कतार लगी रही। यह प्रदर्शनी सुबह 10 से राज 9 बजे तक खुली रहती है।

टीकमगढ़ में ट्रक-बाइक की टक्कर, दो युवकों की मौत

बड़ागांव धसन में ओवरटेक के दौरान हादसा; यूपी से कीटनाशक लेकर लौट रहे थे

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ जिले के बड़ागांव धसन थाना क्षेत्र में शनिवार शाम करीब 5 बजे सड़क हादसे में दो लोगों की मौत हो गई। भदौरा पेट्रोल पंप के पास एक बाइक सवार युवक चार पहिया वाहन को ओवरटेक कर रहे थे, तभी सामने से आ रहे ट्रक से उनकी भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों बाइक सवारों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया।

कीटनाशक लेकर उत्तर प्रदेश से लौट रहे थे- मृतकों की पहचान छतरपुर जिले के सोरखी निवासी सत्येंद्र यादव और झाखर निवासी शोभरान यादव के रूप में हुई है। ये दोनों उत्तर प्रदेश के मड़ावरा से फसल के लिए कीटनाशक खरीदकर अपने गांव लौट रहे थे। पुलिस ने दोनों शवों को बड़ागांव अस्पताल पहुंचाया और परिजनों को घटना की सूचना दी।

दिग्विजय सिंह का केंद्र सरकार पर हमला

बोले- पेट्रोल-डीजल और आर्थिक संकट की बड़ी वजह मोदी सरकार में लीडरशिप का अभाव

भोपाल (नप्र)। मप्र के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने देश में बढ़ते आर्थिक संकट और महंगाई को लेकर केंद्र सरकार पर बड़ा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भारत में मौजूदा आर्थिक संकट की बड़ी वजह मोदी सरकार में लीडरशिप क्राइसिस, दूरदर्शी सोच का अभाव और अक्षमता है।

दिग्विजय ने इसे मोदी सरकार द्वारा निर्मित संकट बताते हुए कहा कि इसका खामियाजा देश की जनता पेट्रोल, डीजल और एलपीजी के बढ़ते दामों के रूप में भुगत रही है।

सोशल मीडिया पर शनिवार सुबह किए गए पोस्ट में दिग्विजय सिंह ने लिखा कि देश की जनता को यह समझना होगा कि अंतरराष्ट्रीय ईंधन क्राइसिस के साथ-साथ भारत में आर्थिक संकट की वजह केंद्र सरकार की नीतियां भी हैं।

उन्होंने कहा कि डीजल के दाम बढ़ने से पूरे देश में महंगाई का असर पड़ता है, जिसका असर उद्योगों, किसानों और घरेलू बजट पर आता है। पूर्व मुख्यमंत्री ने पश्चिम एशिया युद्ध का जिक्र करते हुए कहा कि जब संकट शुरू हुआ तब देश को सब चंगा सी बताया गया और कांग्रेस के सवालों को नजरअंदाज किया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने समय रहते कोई ठोस कदम नहीं उठाए। दिग्विजय ने कहा कि अमेरिकी अनुमति के चलते भारत की संप्रभुता को गिरवी रखने जैसी स्थिति पैदा हो गई है।

दिग्विजय ने पूछे दो सवाल

दिग्विजय सिंह ने केंद्र सरकार से दो सवाल भी पूछे। उन्होंने कहा कि मार्च में रूसी तेल खरीदने के लिए 30 दिन का समय दिया गया था। उन्होंने सवाल उठाया कि प्रधानमंत्री देश को ऐसी स्थिति में क्यों ले आए जहां भारत को अनुमति मांगनी पड़ रही है। उन्होंने दूसरा सवाल पूछते हुए कहा कि जब अंतरराष्ट्रीय क्रूड ऑइल के दाम कम थे, तब मोदी सरकार ने जनता को राहत देने के बजाय करों के जरिए 10 साल में 43 लाख करोड़ कमाए। अब जनता पर महंगाई का अतिरिक्त बोझ क्यों डाला जा रहा है?

श्रीमद्भागवत में पूरा तत्व समाया है, मनुष्य जीवन दुर्लभ है उसे जीवन में एक बार अवश्य ही श्रीमद्भागवत का अध्ययन करना चाहिए: डॉ काशीनाथ मिश्र उड़ीसा

(हीरालाल गोलानी)

भोपाल। सचिदानंद गोपाल पापाय विनाशाय श्रीकृष्ण का पूरा तत्व श्रीमद्भागवत पुराण में पूरा समाया हुआ है,।मनुष्य को 84,लाखों योनियों के उपरांत जीवन मिलता है।यह मनुष्य जीवन बहुत दुर्लभ है। लेकिन है नाशवान। यह जीवन , खेती जैसा आधार है ।जिसमें लाभ ,हानि दोनों निहित हैं। जिसके सद उपयोग से मनुष्य जीवन सार्थक होता है।

जैसे नदियों का जल समुद्र में मिलता है। लेकिन नदी का जल सुखाता नहीं है।इसी प्रकार मनुष्य को भी अपना जीवन सार्थक बनाना चाहिए। अपने जीवन पर सदा विचार करें। कि हमें देना पद मिले इन्द्र पद मिले,मानव से मानव जीवन मिले।या हम मानव से पशु योनि में पहुंचे।या हम यमपुरी में लाखों वर्ष तक धरती पर किए पाप से पड़े रहे उक्त उद्बोधन डाक्टर पंडित काशीनाथ जी मिश्र उड़ीसा ने भोपाल गर्ल्स स्कूल पंचवटी परिसर में पंकज खूबचदानी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथा आयोजन में श्रद्धालुओं के बीच कहें। आपने आगे कहा कि नैमीपाशरण में भगवान वेद व्यास जी से ऋषि मुनियों ने प्रश्न किया कि बड़ा भाग्य बन जाए।ऐसे दो शब्द बतलाएं।वेद व्यास जी बोले अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों पर पीड़ा को समझें कि पूरे विश्व का कल्याण हो,सभी सुखी रहें सभी की निरोगी काया रहे। मनुष्य जीव जन्तु,पशु पक्षियों पर दया करें।कभी भी किसी को जुठन नहीं खिलाएं। शक्कर, गुड़,आटा जो भी हो चिड़िया चींटियों को खिलाएं। इससे बड़े पुण्य मिलते हैं।श्री मिश्र जी ने उपस्थित जनों को समझया कि कभी किसी को भी जुठन नहीं खिलाएं। क्योंकि फिर अगले जन्म में आपको ऐसी ही जुठन खानी पड़ेगी। इससे बचें,इस पर मंथन करें

आप केवल घर में एक मुट्ठी भर अनाज निकाले।आपको ज्यादा नहीं करना है। पराई पीड़ा जानकर उसका सद उपयोग करें। सुबह शाम दूसरों के हित की सोचें। ऐसा नहीं कि यह मुझे मिल जाए,वह मुझे मिल जाए। क्योंकि मृत्यु होने पर कोई कुछ साथ नहीं ले जाता। जीव जन्तुओं को पुत्र तरह पालन करें। वर्तमान में केंसर,लीवर, आदि रोगों से नागरिक पीड़ित हैं। वे दूसरे के अवगुण को देखते हैं। मानव जीवन में विकृतियां घर कर गई है। आज जो विकृतियां उत्पन्न हो गई हैं। उसी परिणाम है कि घातक बीमारियां हावी हो रही हैं।वेद व्यास जी कहते हैं कि पर पीड़ा देखें। आपने आगे कहा कि आजकल तर्पण लगभग नहीं हो रहें हैं।मैं आपसे कहता हूं कि पूर्व के तरफ जल अर्पित करें साथ बार, दक्षिण दिशा की तरफ तीन बार पितरों को जल अर्पित करें। आपने धुव्र एवं प्रहलाद की

समर्पण एवं भक्ति का उत्कृष्ट वर्णन करते हुए कहा कि कितनी कम उम्र में परमपद प्राप्त कर लिया था। वहीं दासी पुत्र महर्षि नारद जी तीनों लोकों आकाश,स्वर्ग, पाताल, धरती पर कहीं बेरोकटोक आज़ सकते हैं। भक्ति में ही शक्ति निहित है। आपने अंत में कहा कि मानव जीव को एक बार श्रीमद्भागवत पुराण का एक बार अवश्य अध्ययन पढ़ना चाहिए। श्रीमद्भागवत के बिना मुक्ति कैसे मिलेगी।

भगवान् वेद व्यास जी भी कहते हैं कि श्रीमद्भागवत के बिना मुक्ति कैसे संभव है। इसका बार बार अध्ययन करें। मनुष्य से मृत्यु पर्यन्त श्रीमद्भागवत पढ़ते रहे। इससे मानव जीवन का बड़ा भाग्य बन जाता है। भगवान् सबका शुभ मंगल करते हैं। मानव को जीवन पर्यंत मनुष्य को पराए पर भी उपकार करना चाहिए है। तभी मनुष्य की जीवन सार्थक है। सर्व भवन्तु सुखिन सुखना मूल आधार है। जीवन सुबह शाम यही कहे सब सुखी रहें। निरोगी काया कर दो ।सभी भगवान के शरण में जाएं।तभी मानव को मुक्ति मिलेगा। आपने अंत में कहा कि वर्तमान में धर्म का व्यवसायीकरण हो गया है। इस अवसर पर मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक भगवान् के गीतों पर नृत्य करने से अपने को रोक नहीं पाए। इस अवसर पर भारी संख्या में मातृशक्ति एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसके पूर्व डाक्टर पंडित काशीनाथ जी मिश्र के आगमन पर रास्ते पर फूल बिछाए गए थे। उनकी अगवानी खूबचदानी परिवार ने की ।सभा के उपरांत प्रसाद का विवरण किया गया।

दमोह में चचेरे भाई-बहन की मौत, तीन अस्पताल में भर्ती

परिजन बोले- कमरे में रखे गेहूं में डाला था कीटनाशक

दमोह (नप्र)। दमोह जिले के पथरिया थाना क्षेत्र के जेरठ गांव में दो चचेरे भाई-बहन की मौत हो गई, जबकि परिवार के दो अन्य बच्चे और एक महिला बीमार हैं। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, गेहूं को कीड़ों से बचाने के लिए उसमें डाली गई कीटनाशक दवा की गंध इस हादसे की वजह मानी जा रही है। मृतक बच्ची भावना (12) के पिता दामोदर लोधी ने बताया कि उन्होंने करीब 8 दिन पहले उस कमरे में रखे 80 बोरी गेहूं में कीटनाशक दवा डाली थी, जहां पूरा परिवार सोता है। शुक्रवार सुबह भावना और उसके 7 साल के चचेरे भाई समीर को अचानक उल्टियां होने लगीं। दोपहर होते-होते दोनों की हालत इतनी बिगड़ी कि अस्पताल ले जाते समय उनकी मौत हो गई। समीर की मां विनीता का भी एक प्राइवेट अस्पताल में इलाज चल रहा है।

दो और बच्चे हुए बीमार- दो बच्चों की मौत के कुछ ही घंटों बाद परिवार के दो और बच्चे, 10 साल का विनय और 3 साल का दीपक भी बीमार हो गए। उन्हें तुरंत जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है, जहां डॉक्टर उनका इलाज कर रहे हैं।पीड़ित बच्चे विनय के पिता दामोदर लोधी का कहना है कि उन्होंने उस गेहूं को खाया नहीं था, बल्कि कीटनाशक की तेज गंध की वजह से ही सबकी तबीयत खराब हुई है। पीड़ित परिवार ने आशंका जताई है कि दुकानदार ने उन्हें जरूरत से ज्यादा तेज गंध वाली दवा दे दी थी।

जिला अस्पताल के डॉक्टर बहादुर सिंह के मुताबिक, यह मामला पॉइजनिंग का ही लग रहा है। बच्चों को उल्टियां होने के बाद मृत हालत में अस्पताल लाया गया था।

59 की माधुरी दीक्षित

'मोहिनी' से 'मां-बहन' के डिजिटल अवतार तक

हिंदी सिनेमा के इतिहास में कुछ नाम ऐसे होते हैं, जो केवल अभिनय तक सीमित नहीं रहते, बल्कि एक युग की पहचान बन जाते हैं। 'धक-धक गर्ल' के नाम से मशहूर माधुरी दीक्षित नेमी एक ऐसा ही नाम हैं। उन्होंने अपने लंबे अभिनय करियर में कई सफल फ़िल्में दी। अपनी समकालीन अभिनेत्रियों में वे बहुत आगे रहीं, पर फिल्मों में उनकी पारी कोई चमत्कार नहीं दिखा सकी। अब माधुरी दीक्षित अपना 59वां जन्मदिन मना रही हैं।

अभिनेत्री माधुरी दीक्षित के 59वें जन्मदिन को उनकी आगामी फिल्म 'मां-बहन' की घोषणा ने खास बना दिया, जो नेटफ्लिक्स पर 4 जून को रिलीज होने वाली है। यह महज एक फिल्म नहीं, बल्कि माधुरी के करियर का एक नया और रोमांचक पड़ाव है। 15 मई 1967 को मुंबई में जन्मी माधुरी दीक्षित ने अपने करियर की शुरुआत 1984 में फिल्म 'अबोध' से की थी। हालांकि, शुरुआती कुछ साल उनके लिए संघर्षपूर्ण रहे। लेकिन 1988 में आई फिल्म 'तेजाब' ने रातों-रात उनकी किस्मत बदल दी। 'एक दो तीन' गाने पर उनके डांस और उनकी मुस्कान ने पूरे देश को अपना दीवाना बना लिया। इसके बाद राम लखन, परिंदा और 'त्रिदेव' जैसी फिल्मों ने उन्हें सफलता की ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया।

90 के दशक में माधुरी दीक्षित बॉलीवुड की इकलौती ऐसी अभिनेत्री थीं, जिनकी स्टार वैल्यू खान सुपरस्टार्स के बराबर मानी जाती थी। उन्होंने न केवल अपनी अदाओं से बल्कि अपनी संजीदा एक्टिंग से भी लोहा मनवाया। 'बेटा' फिल्म के लिए उन्हें 'धक-धक् गर्ल' का खिताब मिला और उन्होंने साबित किया कि वह एक सशक्त अभिनेत्री हैं। 'हम आपके हैं कौन' ने भारतीय

विवाहों और पारिवारिक मूल्यों की परिभाषा ही बदल दी। निशा के किरदार में माधुरी ने जो सादगी और शरारत दिखाई, वह आज भी मिसाल है। 'मृत्युदंड' और 'लाजवंती' फिल्मों के जरिए उन्होंने दिखा दिया कि वह केवल ग्लैमरस भूमिकाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सामाजिक मुद्दों पर आधारित गंभीर सिनेमा की भी वह मल्लिका हैं।

माधुरी दीक्षित एक प्रशिक्षित कथक नृत्यांगना

हैं। पंडित बिरजू महाराज ने भी उनकी प्रतिभा की सराहना की थी। 'देवदास' का 'मार डाला' हो या 'पुकार' का 'के सेरा सेरा', माधुरी के कदम जब भी थिरके, उन्होंने इतिहास रचा। उनकी आंखों की

अभिव्यक्ति और चेहरे के भाव उन्हें समकालीन अभिनेत्रियों से मीलों आगे खड़ा करते हैं। अपने 59वें जन्मदिन के अवसर पर माधुरी ने अपने प्रशंसकों को एक बड़ा तोहफा दिया है। उनकी नई फिल्म 'मां-बहन' का ऐलान हो चुका है। यह फिल्म एक अपराध-हास्य है, जो उनकी पारंपरिक छवि से बिल्कुल अलग है।

फिल्म की कहानी और किरदार के अनुसार, सुरेश त्रिवेणी (जो 'तुम्हारी सुलु' और 'जलसा' जैसी बेहतरीन फिल्में दे चुके हैं) के निर्देशन में बनी यह फिल्म 4 जून को नेटफ्लिक्स पर दस्तक देगी। कहानी 'रेखा' (माधुरी दीक्षित) नाम की एक मां के इर्द-गिर्द घूमती है, जो पहले से ही घर की तमाम जिम्मेदारियों के बोझ तले दबी है। कहानी में मोड़ तब आता है जब उसे अपनी रसोई में एक लाश मिलती है। फिल्म में माधुरी के साथ तृप्ति डिमरी और धरना दुर्गा नजर आएंगी। यह तिकड़ी मिलकर झूठ बोलने, पड़ोसियों से सच छुपाने और उस मुसीबत से निकलने की जद्दोजहद करती है। इसमें रवि किशन, गीतांजलि कुलकर्णी और अरुणोदय सिंह जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में हैं।

सफलता के शिखर पर रहते हुए माधुरी ने डॉ श्रीराम नेने से विवाह किया और अमेरिका चली गईं। एक दशक तक सिनेमा से दूर रहने के बाद जब उन्होंने वापसी की, तो दर्शकों ने उन्हें वैसा ही प्यार दिया। वह न केवल एक महान अभिनेत्री हैं, बल्कि एक समर्पित मां और पत्नी भी हैं। आज के दौर में भी वह रियलिटी शो और सोशल मीडिया के जरिए नई पीढ़ी के साथ मजबूती से जुड़ी हुई हैं। माधुरी दीक्षित का 59 साल का सफर यह सिखाता है कि प्रतिभा कभी बूढ़ी नहीं होती। 'तेजाब' की मोहिनी से लेकर 'मां-बहन' की रेखा तक, उन्होंने खुद को समय के साथ ढाला है। नेटफ्लिक्स की निदेशक रुचिका कपूर शेख के अनुसार, यह फिल्म माधुरी को एक ऐसे रोमांचक मोड़ पर पेश करेगी जो दर्शकों ने पहले

रियल बॉक्स

जब नायक प्रेमी से मनोविकारी बन गया

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

भारतीय सिनेमा में प्रेम हमेशा सबसे लोकप्रिय विषय रहा है। प्रेम की कोमलता, त्याग, समर्पण और विरह की पीड़ा को फिल्मों ने जिस भावुकता से प्रस्तुत किया, उसने दर्शकों की पीढ़ियों को प्रभावित किया। एक समय था जब फिल्मों का नायक प्रेम के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देता था। वह प्रेमिका की खुशी के लिए खुद को मिटा देने में भी संकोच नहीं करता था। लेकिन समय बदला और सिनेमा का प्रेम भी बदल गया। अब परदे पर ऐसा प्रेमी दिखाई देने लगा, जो प्रेम में असफल होने पर हिंसक, आक्रामक और मनोविकारी बन जाता है। प्रेम उसके लिए भावना नहीं, बल्कि अधिकार बन गया। यही बदलाव आज के सिनेमा और समाज दोनों के लिए गंभीर प्रश्न खड़े करता है। हिंदी फिल्मों में लंबे समय तक प्रेम को पवित्र और त्यागमयी रूप में दिखाया गया। राज कपूर, दिलीप कुमार और देव आनंद के दौर का नायक प्रेम में हारकर भी मर्यादा नहीं छोड़ता था। वह दर्द सह लेता था, मगर प्रेमिका के जीवन में हिंसा नहीं लाता था। 'मुग़ल-ए-आज़म', 'आवारा', 'गाइड' और 'अराधना' जैसी फिल्मों में प्रेम का दर्द था, पर उसमें प्रतिशोध का उन्माद नहीं था। उस दौर का नायक समाज की सीमाओं और रिश्तों की गरिमा समझता था। लेकिन, 1990 के दशक में फिल्मों के नायक का चरित्र तेजी से बदला।

उदारीकरण के बाद समाज में उपभोक्तावाद और व्यक्तिवाद बढ़ा। इसी दौर में फिल्मों ने ऐसे प्रेमियों को जन्म दिया, जो प्रेम में असफल होकर मानसिक असंतुलन और हिंसा की राह पकड़ लेते हैं। इस बदलाव का सबसे बड़ा उदाहरण शाहरुख खान की फिल्में बनीं। बाज़ीगर, डर और 'अंजाम' में उन्होंने ऐसे पात्र निभाए, जो प्रेम को अधिकार समझते हैं। इन फिल्मों में नायक प्रेमिका को पाने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार रहता है। 'डर' का राहुल आज भी हिंदी सिनेमा के सबसे खतरनाक प्रेमियों में गिना जाता है। वह एकतरफा प्रेम में इतना पागल हो जाता है कि प्रेमिका की निजी जिंदगी में दखल देता है, उसका पीछा करता है और उसके पति की हत्या तक की योजना बना डालता है। यह प्रेम नहीं, बल्कि जुनून और स्वामित्व की भावना थी। इसके बावजूद दर्शकों ने इस किरदार को लोकप्रिय बना दिया। यही वह मोड़ था, जहां सिनेमा ने प्रेम और हिंसा को एक साथ परोसना शुरू किया। इसी तरह 'अंजाम' में शाहरुख खान का पात्र अस्वीकृति को स्वीकार नहीं कर पाता और प्रतिशोध में पूरी जिंदगी तबाह कर देता है। यह चरित्र प्रेम के नाम पर हिंसक मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है।

दिलचस्प बात यह है कि इन फिल्मों में खलनायक और नायक की रेखाएं धुंधली हो गईं। दर्शक उस पात्र से डरते भी थे और प्रभावित भी होते थे। प्रेम में मानसिक असंतुलन का यह चित्रण केवल शाहरुख खान तक सीमित नहीं रहा। 'अग्निसाक्षी' में नाना पाटेकर ने ऐसे पति की भूमिका निभाई, जो पत्नी को अपनी निजी संपत्ति समझता है। उसकी असुरक्षा और पागलपन उसे हिंसक बना देते हैं। इसी विषय पर बनी 'दरार' में अरबाज खान का चरित्र भी इसी मानसिकता का विस्तार था। इन फिल्मों ने यह दिखाया कि प्रेम में असफलता या असुरक्षा किस तरह व्यक्ति को विनाशकारी बना सकती है। भारतीय सिनेमा में मानसिक रोगों को अक्सर प्रेम की विफलता से जोड़कर दिखाया गया। 'खामोशी' जैसी फिल्मों में मानसिक पीड़ा को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने की कोशिश हुई थी। वहीदा रहमान का चरित्र प्रेम और कर्तव्य के बीच टूटता दिखाई देता है। लेकिन बाद के वर्षों में मानसिक रोग केवल नाटकीयता पैदा करने का माध्यम बनकर रह गए। 'तेरे नाम' में सलमान खान का चरित्र

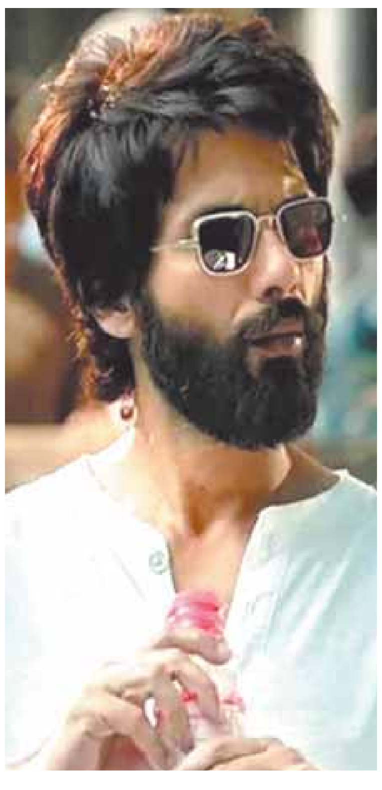

प्रेम में असफल होकर मानसिक संतुलन खो बैठता है। फिल्म की लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि देशभर में युवाओं ने उसकी हेयरस्टाइल तक अपनाई। यह फिल्म प्रेम में हिंसक जुनून को रोमांटिक रूप में प्रस्तुत करती नजर आई। समस्या यह नहीं कि फिल्मों में मानसिक विकार दिखाए गए। समस्या यह है कि उन्हें अक्सर ग्लैमर और रोमांच के साथ प्रस्तुत किया गया।

सिनेमा ने कई बार यह संदेश दिया कि सच्चा प्रेम वही है, जिसमें दीवानगी हो, जुनून हो और प्रेमिका को किसी भी कीमत पर हासिल करने की चाह हो। यह सोच वास्तविक जीवन में खतरनाक साबित होती है। आज समाज में प्रेम-प्रसंगों से जुड़ी हिंसक घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। असफल प्रेमी द्वारा हत्या, एसिड अटैक, पीछा करना और आत्मघाती कदम उठाने जैसी घटनाएं चिंता का विषय बन चुकी हैं। दरअसल, फिल्मों का प्रभाव समाज पर गहरा पड़ता है। खासकर युवा दर्शक फिल्मों के नायकों को आदर्श मानते हैं। जब परदे पर दिखाया जाता है कि प्रेमिका के इंकार के बाद भी लगातार पीछा करना सच्चे प्यार की निशानी है, तब यह मानसिकता समाज में भी प्रवेश करती है। कई फिल्मों में नायिका अंततः उसी लड़के को स्वीकार कर लेती है, जो उसका लगातार पीछा करता रहा हो। इससे युवाओं के मन में गलत संदेश जाता है कि जिद और आक्रामकता प्रेम प्राप्त करने का साधन हो सकते हैं। हालांकि, भारतीय सिनेमा का दूसरा पक्ष भी है। कुछ फिल्मकारों ने मानसिक रोगों और असफल प्रेम को संवेदनशील दृष्टि से समझने की कोशिश की। 'रॉकस्टार', 'तमाशा' और 'कबीर सिंह' जैसी फिल्मों पर भी बहस हुई कि वे प्रेम और मानसिक असंतुलन को किस तरह प्रस्तुत करती हैं। 'कबीर सिंह' को लेकर विशेष विवाद हुआ, क्योंकि उसका नायक गुस्सैल, आत्मविनाशी और हिंसक व्यवहार वाला व्यक्ति है, फिर भी उसे रोमांटिक नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस फिल्म ने युवाओं के बीच लोकप्रियता भी हासिल की और आलोचना भी झेली।

आज का दौर सोशल मीडिया और त्वरित प्रसिद्धि का है। रिश्तों में धैर्य कम हुआ है और अस्वीकार को सहन करने की क्षमता भी घटती दिखाई देती है। फिल्मों में जब असफल प्रेमी को हीरो की तरह दिखाया जाता है, तब यह समाज में पहले से मौजूद असुरक्षा और आक्रामकता को और बढ़ा देता है। यही कारण है कि अब फिल्मों की सामाजिक जिम्मेदारी पर गंभीर बहस होने लगी है। यह कहना गलत होगा कि समाज केवल फिल्मों से प्रभावित होता है। सिनेमा समाज से ही कहानियां लेता है। लेकिन यह भी सच है कि फिल्मों में दिखाई गई चीजें लोगों के व्यवहार को प्रभावित करती हैं। इसलिए फिल्मकारों की जिम्मेदारी केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रह जाती। उन्हें यह भी समझना होगा कि प्रेम को हिंसा और स्वामित्व की भावना के रूप में प्रस्तुत करना समाज को गलत दिशा में ले जा सकता है।

भारतीय सिनेमा का नायक कभी त्याग और मर्यादा का प्रतीक माना जाता था। आज वही नायक कई फिल्मों में असफल प्रेम के बाद हिंसा, बदले और मानसिक विकार का चेहरा बन गया है। यह बदलाव केवल फिल्मों का नहीं, बल्कि समाज के बदलते मनोविज्ञान का संकेत भी है। उपभोक्तावादी संस्कृति ने रिश्तों को भी प्रतिस्पर्धा और अधिकार की वस्तु बना दिया है। प्रेम अब धैर्य और समर्पण की जगह कई बार अहंकार और स्वामित्व का रूप लेने लगा है। जरूरत इस बात की है कि सिनेमा प्रेम को उसकी संवेदनशीलता और मानवीय गरिमा के साथ प्रस्तुत करे। प्रेम यदि स्वतंत्रता, सम्मान और स्वीकार्यता का नाम है, तो उसमें हिंसा और जुनून के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। वरना परदे का यह 'पागल प्रेमी' समाज के लिए खतरनाक प्रेरणा बनता रहेगा।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'गवर्नर' में दिखेगा देश को बचाने का संघर्ष

भारतीय सिनेमा में बीते कुछ वर्षों से वास्तविक घटनाओं और देश के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दौर पर आधारित फिल्मों की संख्या तेजी से बढ़ी है। दर्शक भी ऐसी कहानियों को पसंद कर रहे हैं, जिनमें मनोरंजन के साथ इतिहास और समाज की सच्चाई जुड़ी हो। इसी क्रम में निर्माता विपुल अमृतलाल शाह अब एक और गंभीर और चर्चित विषय को बड़े पर्दे पर लेकर आ रहे हैं। उनकी नई फिल्म 'गवर्नर : द साइलेंट सेवियर' का टीजर जारी होते ही चर्चा का विषय बन गया है।

मनोज बाजपेयी के जन्मदिन के अवसर पर पहले फिल्म का पोस्टर जारी किया गया था और अब इसकी पहली झलक ने दर्शकों की उत्सुकता और बढ़ा दी है। छोटी सी झलक में ही फिल्म का गंभीर वातावरण, तनावपूर्ण परिस्थितियां और मनोज बाजपेयी का

प्रभावशाली अभिनय लोगों का ध्यान खींच रहा है। दर्शकों को महसूस हो रहा है कि यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि देश के इतिहास के एक अहम मोड़ की कहानी सामने लाने वाली है।

फिल्म की कहानी 1990 के दशक के उस दौर पर आधारित है, जब भारत गंभीर आर्थिक संकट से गुजर रहा था। देश का विदेशी मुद्रा भंडार बेहद कम हो चुका था और हालात इतने खराब बताए जाते हैं कि कुछ दिनों तक ही आयात चल पाने की स्थिति बची थी। उस समय देश को आर्थिक रूप से संभालने के लिए कई बड़े और कठोर फैसले लेने पड़े थे। टीजर में इसी तनावपूर्ण माहौल की झलक दिखाई गई है। बंद कमरों में चल रही बैठकों, सरकार और आर्थिक तंत्र की बेचैनी तथा देश को संकट से बाहर निकालने की कोशिशों को प्रभावशाली ढंग से दिखाया गया है। फिल्म इस बात को सामने लाने की कोशिश करती नजर आती है कि कैसे कुछ लोग बिना किसी चर्चा या सुर्खियों में आए देश को टूटने से बचाने में लगे हुए थे।

सैफ की 'कर्तव्य' असर नहीं छोड़ पाई

नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई फिल्म 'कर्तव्य' चर्चा में जरूर है, लेकिन दर्शकों को कुछ नया और रोमांचक देने में यह काफी हद तक कमजोर साबित होती है। अपराध, राजनीति और ऑनर किलिंग जैसे पुराने विषयों पर आधारित यह कहानी शुरुआत से ही अनुमानित लगती है। फिल्म देखते समय लगातार किसी बड़े मोड़ की उम्मीद बनी रहती है, लेकिन अंत तक कहानी कोई खास चौंकाने वाला असर नहीं छोड़ती। फिल्म में सैफ अली खान एक ईमानदार पुलिस अधिकारी की भूमिका में दिखाई देते हैं और उनका अभिनय पूरी फिल्म की सबसे मजबूत कड़ी बनकर सामने आता है। संवाद बोलने का अंदाज, गंभीर व्यक्तित्व और पर्दे पर उनकी

मौजूदगी कई दृश्यों को प्रभावशाली बनाती है। हालांकि दमदार अभिनय के बावजूद वे कमजोर पटकथा को पूरी तरह संभाल नहीं पाते। अभिनेता सौरभ द्विवेदी खलनायक की भूमिका में नजर आते हैं, लेकिन उनका किरदार ज्यादा प्रभाव नहीं छोड़ता। कई दृश्यों में उनका असर कमजोर महसूस होता है और दर्शकों को उनसे कहीं ज्यादा ताकतवर प्रस्तुति की उम्मीद थी। संजय मिश्रा और रसिक दुग्गल ने अपने-अपने किरदारों में अच्छा काम किया है, लेकिन उन्हें अभिनय दिखाने का पर्याप्त अवसर नहीं मिला। 'भक्षक' जैसी चर्चित फिल्म बना चुके निर्देशक पुलकित से दर्शकों को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन इस बार उनका निर्देशन खास प्रभाव नहीं छोड़ता। फिल्म की पटकथा और प्रस्तुतीकरण पुराने ढर्रे पर चलते नजर आते हैं, जिसकी वजह से यह अपराध-रोमांचक फिल्म साधारण बनकर रह जाती है।

अशोक जोशी

हर दौर में बदलते रहते हैं सितारों के दौर

हिंदी फिल्मों के चमकते सितारों की कहानियां हमेशा बदलती रही है। फिल्मों के सितारों के साथ कई बार ऐसा हुआ है कि कल तक जिन सितारों के सितारे जगमगा रहे थे, अचानक वह धूमकेतु की पूंछ की तरह गर्द में समा गए। कई सितारों के पास आजीविका की कोई

तंगी नहीं रही, लेकिन उनकी असफलता उन्हें नशाखोरी में डुबो गई और रजतपट से उनकी विदाई हो गई। सफलता से असफलता का यह सिलसिला केवल अभिनेताओं के साथ ही चला। कुछ ऐसी अभिनेत्रियां भी हुई जिन्होने सफलता का स्वाद तो खूब चखा, लेकिन जब असफलता की बेल उनके करियर पर फूली तो वह असफलता के समंदर में डूब गई।

बीते जमाने के कलाकारों की बात की जाए तो हिन्दी सिनेमा में मोतीलाल ऐसे सितारे हुए जिनके बारे में यह कहा जाता था कि यदि किसी के शरीर पर सूट फबते हैं तो वह है मोतीलाल। मेथड एक्टिंग के सरताज मोतीलाल का एक जमाना था। निर्माता उनके घर पर कतारे लगाए खड़े रहते थे। कहा जाता है कि उस जमाने की खूबसूरत स्टार शोभना समर्थ के साथ उनके खास संबंध थे। अनाडी, असली नकली, मस्ताना , देवदास जैसी फिल्में देने वाले इस स्टार का एक समय ऐसा भी आया जब आर्थिक तंगी ने उन्हें शराबखोर बना दिया और छोटी छोटी बातें के बाद तो उनका सितारा ही अस्त हो गया।

भगवान दादा जो कभी मुंबई की चाल से आकर बॉलीवुड के इतने बड़े सितारे बन गए थे कि उनके पास चालीस कमरों वाला बंगला और सप्ताह के सात दिनों के लिए सात अलग अलग विदेशी कारों का जखीरा था। फिल्मी व्यापार में अनाड़ी और दौलत लुटाने में दिलदार इस अभिनेता के बारे में यह कहा जाता था कि सफलता के दौर में अपने अभिन्न मित्र सी रामचन्द्र के साथ मिलकर वह रात को बोरों में नोट भरकर गरीब बस्तियों में जाते थे और नोट लुटाकर लौट आते थे। लेकिन, समय का चक्र कुछ ऐसा चला कि एक के बाद एक फ्लॉप फिल्मों का निर्माण कर भगवान दादा कर्ज के दलदल में ऐसे फंसे कि बंगला और कारें सब बिक गई और वह फिर से चाल में लौट आए।

ऐसे ही एक सुपरस्टार हुए थे भारत भूषण। वे एक सफल सितारा थे। मुंबई में उनका आलीशान बंगला था जिसकी लाइब्रेरी में एक लाख से अधिक महंगी और दुर्लभ पुस्तकें थी। यह पुस्तकालय साहित्यकारों के लिए खुला रहता था। कहा जाता है कि साहिर लुधियानवी ज्यादातर समय वहां बिताते थे। पौराणिक और सांस्कृतिक फिल्मों के स्टार भारत भूषण को राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिला। 'बरसात की रात' जैसी सुपर हिट बनाने के बाद फिल्म निर्माण का चस्का उन्हें

ले डूबा। उनके भाई की फिल्मों 'नई उमर की नई फसल' और 'ग्यारह हजार लड़कियाँ' की असफलता से वह घर से बेघर हो गए। कुछ पैसा जो उन्होने अपने भाई के नाम से जमा किया था वह भी उनका भाई डकार गया। उन्हें अपना बंगला राजेन्द्र कुमार को बेचना पड़ा, जो बाद में राजेश खन्ना के 'आशीर्वाद' बंगले के रूप में मशहूर हुआ और उनकी मौत के बाद लगभग 200 करोड़ रूपए में बिका। इसी बंगले के मालिक रहे भारत भूषण को अपने आखिर दिन छोटे से फ्लैट में बिताने पड़े थे।

ऐसी बात नहीं है कि सफल सितारे एकदम ही डूब गए। कई सितारों के पास आजीविका की कोई तंगी नहीं रही, लेकिन उनकी असफलता उन्हें नशाखोरी में डुबो गई और रजतपट से उनकी विदाई हो गई। इस फेहरिस्त में राजेश खन्ना का नाम सबसे ऊपर आता है। राजेश खन्ना ने सफलता का जो दौर देखा वह किसी दूसरे सितारे को नसीब नहीं हुआ। पैसों की उनके पास कोई तंगी नहीं थी। लेकिन चमचों से घिरे काका जब अर्श से फर्श पर आए तो सारे संगी साथी उनका साथ छोड़ गए। एक के बाद एक उनकी फिल्में पिटती गई। उनके पास नाम तो था। संसद की सदस्यता भी थी लेकिन बॉलीवुड से उनका दौर समाप्त हो चुका था। जब विवेक ओबेराय फिल्मों आए तो लग रहा था कि वह धूम मचा देंगे। ऐसा हुआ भी, लेकिन ऐश्वर्या राय को लेकर उन्होंने जबसे सलमान से पंगा लिया उनका करियर चौपट हो गया। बाद में उन्होंने विदेशों में कंस्ट्रक्शन वर्क्स से उतना कमाया जितना बॉलीवुड से भी नहीं कमाया। वह आज भी आर्थिक रूप से बहुत मजबूत हैं लेकिन उनका स्टारडम चौपट हो गया।

'लव स्टोरी' के प्रदर्शन से ही कुमार गौरव स्टार बन गए थे। उम्मीद लगाई जा रही थी कि जुबली कुमार के बेटे अपने पिता की राह पर चलते हुए बॉलीवुड में छा जाएंगे। लेकिन, गलत फिल्मों के चुनाव ने उन्हें पटरी से उतार दिया। 'नाम' के अलावा उनकी कोई हिट फिल्म नहीं हुई । उनके लिए राजेन्द्र कुमार ने कुछ फिल्मों का निर्माण भी किया, पर वे कुमार गौरव का गौरव वापस नहीं लौटा पाया। आज भले ही वह विदेश में हास्पिटैलिटी बिजनेस से लाखों डॉलर कमा रहे हैं, लेकिन बॉलीवुड में उनकी दाल नहीं गल पायी।

महमूद हिन्दी फिल्मों के एकमात्र हास्य कलाकार थे जो किसी जमाने में नायक से भी ज्यादा पारिश्रमिक पाते थे। निर्माता और निर्देशक के रूप में भी वे सफल थे। बॉलीवुड में उनकी इतनी चलती थी कि उनके एक फोन पर नामी निर्माता किसी को भी काम दे देते थे। उनकी सिफारिश पर ही मुमताज को राम और श्याम, फरीदा जलाल और अरुणा ईरानी को 'बॉबी' में एंट्री मिली थी। एक समय ऐसा भी आया जब वह काम के लिए भटकते रहे, लेकिन उन्हें किसी ने काम नहीं दिया। उन्होंने कहा था कि उन्हें पैसो के लिए नहीं, बल्कि जीने के लिए काम चाहिए। क्योंकि, वह कैमरे से दूर नहीं रह सकते थे। ऐसे वक्त में उन्हें सबसे पहले चांस देने वाले देव आनंद आगे आए और उन्होंने महमूद को मनपसंद, लूटमार और 'देस परदेस' सहित अपनी कई फिल्मों में काम दिया।

ऐसी बात नहीं कि सफलता से असफलता का यह सिलसिला केवल अभिनेताओं के साथ ही चला। कुछ ऐसी अभिनेत्रियां भी हुई जिन्होने सफलता का स्वाद तो खूब चखा, लेकिन जब असफलता की बेल उनके करियर पर फूली तो वह असफलता के समंदर में डूब गई। ऐसी अभिनेत्रियों सबसे पहला नाम है नादिरा का। अपनी पहली फिल्म 'आन' से सितारा हैसियत पाने वाली इस बोल्ड और ब्यूटीफुल अभिनेत्री जब असफलता के सागर में डूबी तो पैसे पैसे के लिए मोहताज हो गई। अंतिम दिनों में प्रेमनाथ उन्हें आजीवन अच्छी खासी आर्थिक मदद करते रहे।

परवीन बॉबी भी सुंदरता और सफलता की पर्याय थी। बॉलीवुड के सभी स्टारों के साथ जोड़ी बना चुकी परवीन वैसे ही घर से रईस थी। फिल्मी दुनिया में भी उन्होंने खूब नाम और दाम कमाया। लेकिन, असफल प्रेम प्रसंग, खुली जिन्दगी और धोखों ने उन्हें कई सालों तक गुमनामी में धकेल दिया। जब उनको पता चला तो वह पूरी तरह से बदल गई थी। उनका अंत भी दर्दनाक हुआ। 'हमराज' से स्टार का दर्जा हासिल करने वाली विम्मी का हश्र भी कुछ ऐसा ही हुआ। हीरो, दामिनी और घायल की नायिका मीनाक्षी शेषाद्री भी सफलता के बाद गुमनामी में डूब गई। सलमा आगा, मंदाकिनी और ममता कुलकर्णी भी सफलता के आसमान पर पतंग की तरह खूब ऊंचा उड़ी, लेकिन जब बॉलीवुड से उनकी पतंग कटी तो वह कहां जाकर गिरी कोई नहीं जानता। सफलता और असफलता के इस दौर को देखकर इसी परम्परा के शिकार राजेश खन्ना की फिल्म दाग का संवाद एकदम सटीक बैठता है जिसे वह अक्सर धाराप्रवाह स्वर में सुनाया करते थे, 'यह भी एक दौर है, वह भी एक दौर था, आज यहां कोई और है, कल वहा कोई और था।'

लो, अब हम अपने पैरों पर खड़े हो गए !

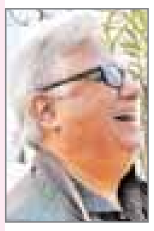

बाखबर

प्रकाश पुरोहित
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

ना सेना में भर्ती चल रही थी... ! तभी एक युवक आया। उसका नाप लिया, कद पांच फुट तीन इंच, वजन- बत्तीस किलो, सीना- सत्ताइस इंच। अफसर झल्ला गया... कुछ भी तो ढंग का नहीं है... फिर क्यों आए हो? लड़के ने ठसके से जवाब दिया मैं तों यह कहने आया हूं कि... मेरे भरोसे मत रहना। क्या हमारी सरकार भी ऐसी ही नहीं है...?

देश तभी आत्मनिर्भर बनता है, जब लोग आत्मनिर्भर बनाए जाते हैं। कोरोना के समय सरकार ने पूरी कोशिश की थी कि एक झटके में देश अपने पैरों पर खड़ा हो जाए और उसके लिए थाली, कटोरी, चम्मच तक बजवा दिए थे दूरदर्शी सरकार ने। देखा ही होगा कि कैसे मुंबई से परिवार पैदल ही निकल पड़ा था बिहार या यूपी के अपने गांव के लिए। सरकार चाहती तो सारी सुविधाएं दे सकती थी, लेकिन तब देश अपने पैरों पर कैसे चलता ! हर दिशा से लोग अपने पैर के भरोसे चले जा रहे थे। ऐसा भी नहीं है कि सभी रास्ते में ही मर गए हों, कोशिश करने वालों को मंजिल मिल भी गई।

नकली आज़ादी (1947) के बाद से सरकारों ने गंदी आदत डाल दी थी कि जो भी करेगी, सरकार करेगी। दूसरी आजादी यानी 2014 के बाद जनता को खुद पर भरोसा करना सिखाया है। गैर-भाजपा सरकारों में आज भी यही दुर्गुण है कि जनता को, सरकारी भरोसे पर रखना चाहती हैं। अपंग बना रखा है जनता को। हर जगह खुद हाजिर और जनता को निठल्ला बनाए रखना चाहती हैं। इस सरकार की यही खासियत है कि संकट के हर मौके पर जनता क्या करे, इनके पास नुस्खे तैयार हैं। यह सरकार कभी नहीं कहती कि हम क्या करेंगे, जनता से कहती है कि आप खुद करिए। नोटबंदी के समय घंटों कतार में रहना सिखाया था या नहीं, तब से जनता लाइन में ही है।

जिस तरह बाप चाहता है ना कि नालायक औलाद भी कुछ जिम्मेदारी समझे और काम से लगे, कुछ वही अंदाज और तरीका है हमारी सरकार का। हर बाप के पास तो खानदानी रोजगार होता नहीं है ना। रोज घर में घुसते ही पूछताछ शुरू हो जाती है कि 'कोई काम मिला या नहीं!' नहीं मिलता है तो कोसता है, 'कैसे नालायक से पाला पड़ा है।' ये सरकार भी ऐसे ही काबिल बाप की तरह है कि चाहती है खुद ही रोजगार तलाशें और सरकार के भरोसे रहना छोड़ दें। देखिए, पूरे देश में कहीं रोजगार के लिए आंदोलन हो रहे हैं, नगर-शहर बंद हो रहे हैं, तोड़-फोड़ हो रही। पुलिस तो भूल ही चुकी है कि लाठीचार्ज क्या होता है, वो तो आजकल सिर्फ ट्रैफिक-चालान बनाने में ही मशगूल है।

हर तरफ यह बदलाव नजर आने लगा है। पहले शिकायत होती थी कि सरकारी स्कूलों में सुविधा, साधन नहीं हैं। अब कोई शिकायत ही नहीं करता कि सरकार ने हजारों सरकारी स्कूल ही बंद कर दिए। जब प्रायवेट में सारी सहूलियत है तो सरकार पर बोझ क्यों !

अस्पताल का रोना भी अब सुनाई नहीं देता है कि वहां डॉक्टर ही नहीं मिलते हैं तो 'दवा-दारू' की कमी के बारे में कौन बात करे ! एक्स-रे और मेडिकल जांच का भरोसेमंद होना इस बात से तय होता है कि प्राइवेट में हुई या नहीं। सरकारी डॉक्टर भी सरकारी अस्पताल की रिपोर्ट फेंक देता है कि प्राइवेट में कराओ। जब सरकारी डॉक्टर खुद प्राइवेट में मरीज देखता हो तो फिर सरकारी जांच का क्या ! जब जनता ही नहीं जा रही सरकारी अस्पताल तो डॉक्टर जाकर क्या भटे बघारेंगे।

अब फिर सरकार को मौका मिला है जनता को अपने पैरों पर और खड़ा करने का ! युद्ध हो रहा है करीब ढाई माह से, सरकार को उम्मीद थी कि लोग समझदार हो गए होंगे इतने झटके खाने के बाद, लेकिन जनता भी तो कुत्ते की पूंछ है, जब निकालो टेढ़ी की टेढ़ी ! लगा था कि हालात देखते हुए लोग खुद ही पेट्रोल-डीजल का खर्च कम कर लेंगे, विदेश यात्रा बंद कर देंगे (अब प्रधानमंत्री तो बंद कर नहीं सकते कि पूरी दुनिया घूम कर विश्व-गुरु बनना है!), सोना खरीदने से छिटकने लगेंगे, लेकिन नासमझ जनता के भेजे में यह बात आई ही नहीं, तो सरकार को आगे आकर समझाना पड़ा कि 'ये सब बंद कर दीजिए, इनके बगैर मर नहीं जाएंगे', ऐसा कहा तो नहीं, लेकिन आशय यही था।

इस बार तो सरकार ने त्याग और बलिदान की अलग ही मिसाल पेश कर दी है कि गाड़ियों के काफिले में जबर्दस्त कटौती कर दी (क्योंकि विदेश में हैं कुछ रोज)। यह जनता के लिए शर्म से डूब कर मर जाने जैसा है कि जो काम जनता को करना चाहिए था, सरकार कर रही है। नेता होने की कितनी कीमत चुकानी पड़ती है, यहां समझ आता है। जनता को उदाहरण सहित समझाने के लिए यह भी हुआ कि मंत्री खुद तो साइकल से चले और उनकी तमाम गाड़ियां पीछे-पीछे चली।

इस बार यदि युद्ध (रूस-यूक्रेन वाला नहीं) थोड़े दिन और चला तो यकीनन भारत की जनता आत्मनिर्भर तो हो ही जाएगी। सरकार ने पूरे इंतजाम कर दिए हैं। यह हमारी पूर्व तैयारियों का ही नतीजा है कि संकट के इस वक्त में हम सरकार से कोई उम्मीद नहीं कर रहे हैं।

बदलते वक़्त की आवश्यकता क्यों बन गया क्लाउड किचन

...और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी
लेखिका साहित्यकार हैं।

जिन्हें इस विषय में पता नहीं उनकी जानकारी के लिये बता दूँ कि क्लाउड किचन क्या होता है? ये एक ऐसा व्यवसायिक माध्यम है जिसमें खाना तो बनाया जाता है पर कोई रेस्टोरेंट जैसी जगह नहीं होती। कई बार इसे घोस्ट किचन या डार्क किचन या वर्चुअल रेस्टोरेंट भी कहा जाता है। इसका पूरा काम ऑनलाइन ऑर्डर पर होता है या तो मालिक स्वयं की एप लांच करते हैं या बड़े माध्यम जैसे जौमेटो, स्विगी के ज़रिये अपनी सेवा देते हैं।

क्लाउड किचन में एक रसोईघर होता है जहाँ केवल खाना तैयार होता है यहाँ टेबल कुर्सी, वेटर आदि की आवश्यकता नहीं होती है। ऑनलाइन के लिये इंटरनेट की आवश्यकता होती है और रसोइये हेल्पर की बाकी ऑर्डर ले जाने के लिये। एप के ज़रिये भोजन पहुंचाने का काम जौमेटो या स्विगी के बंदे करते हैं। आप अगर स्वयं सीधे ऑर्डर लेते हैं तो आप को अपने बंदे रखने होंगे। नये लोगों के लिये मेरी सलाह है शुरूआती दौर में पूरी जिम्मेदारी ना लेकर जौमेटो, स्विगी से जुड़ जाये।

रही बात खर्च की तो आप को कोई सेटअप नहीं लगाना। पूरा कारोबार इंटरनेट और डिलीवरी ऐप्स पर निर्भर है। यहाँ केवल रसोइये पैकिंग स्टाफ और प्रबंधन कर्मचारी से काम चल जाता है।

अगर आप ज़्यादा प्रॉफिट चाहते हैं तो एक विशेष प्रकार के भोजन की जगह, इटैलियन, चाइनीज़, नार्थ, साउथ इंडियन, विभिन्न व्यंजन बना सकते हैं। इस कार्य में कम लागत में व्यवसाय शुरू कर सकते हैं, इसे घर से शुरू किया जा सकता है।

इस कार्य में थोड़े धैर्य की आवश्यकता होती है ग्राहकों की शिकायत सुनना होता है क्योंकि ये बिजनेस रेटिंग पर बहुत निर्भर होता है डिलीवरी बॉय की फुर्ती की नियमितता होनी चाहिये। इसमें प्रतिस्पर्धा बहुत है। मेरा सुझाव है शुरूआती दौर में कई नावों में पैर ना रखकर एक ही प्रकार के व्यंजन पर फोकस किया जाये। मसलन हमारी कॉलोनी की सी.आई. में रहने वाली शक्ति अपने घर से सलाद की सर्विस देती है उनका कहना है। चूंकि सलाद की सामग्री जैसे चैरी टोमेटो, एवाकाडो वगैरह सब फ्रेश लाना होता है और सलाद का सामान भी महंगा आता है सबसे बड़ी दिक्कत आती है मार्केटिंग की। कई बार लागत ज्यादा हो जाती है। सलाद को अभी लोग शंका की दृष्टि से ही देखते हैं कि ताज़ा है या नहीं। इतना महंगा क्यों है। पर मेरे ये पूछने पर कि आप सलाद बार खोलना चाहेंगी उन्होंने मना कर दिया कि वो अपने क्लाउड किचन से खुश हैं बल्कि उन्हें अपने काम में मज़ा आ रहा है थोड़े समय बाद प्रॉफिट भी हो ही जायेगा।

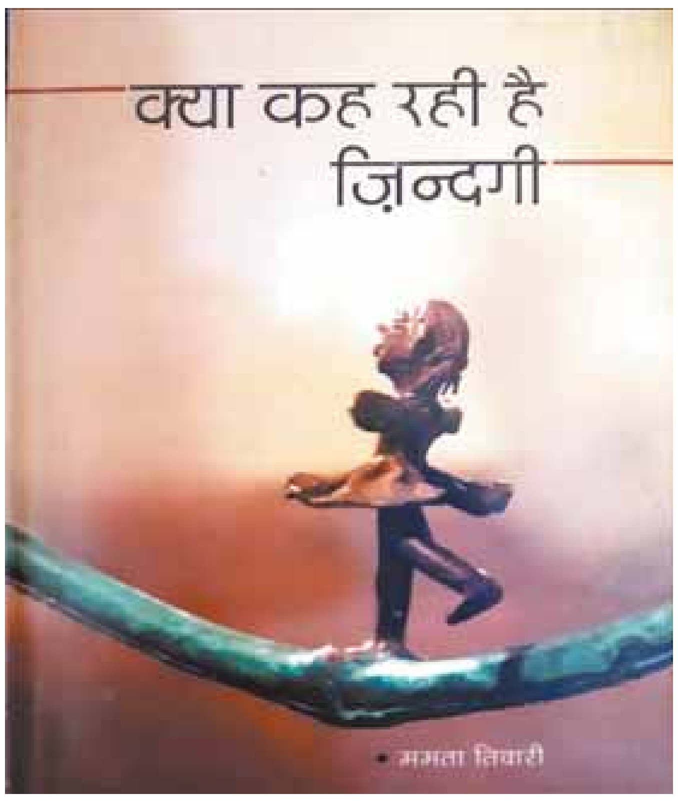

उसी प्रकार एक और परिचित जो कैटरिंग फूड और त्यौहार पर बनने वाले व्यंजन जैसे गुझिया, पपड़ी, सेव, गुलाब जामुन का बड़ा व्यवसाय करती है वो आपको पैक्ड फूड पार्टी के लिये भेज देती है। कई बार स्वयं भी जाकर गर्म रोटियाँ या ताज़ा तलने की सुविधा भी प्रदान करती है। ज्यादातर वे ऑर्डर पर ही अपना बिजनेस चलाती है। मैंने नोटिस किया महिलायें जिन्हें कुकिंग में रूचि है और कुछ पैसा कमाना चाहती हैं और घर से बाहर नहीं जाना चाहती उनके लिये क्लाउड किचन बेहतर ऑप्शन है। कोविड के बाद से इसकी महत्ता बढ़ी है जिन शहरों में स्टूडेंट्स बाहर से आते हैं उन्हें घर का खाना चाहिये होता है उनके लिये क्लाउड किचन ही एकमात्र सहारा है। इसके लिये कुछ फूड लाइसेंस जैसे एफएसएसएआई के साथ अच्छी पैकेजिंग, ऑनलाइन ऐप्स पर रजिस्ट्रेशन, स्वच्छता और गुणवत्ता की भी आवश्यकता होती है। बैंगलोर में सॉफ्टवेयर डेवलपर कहती है कि अचानक उनकी सास उनके घर आ गई उन्हें घर का खाना और मेरे हाथ की सिंकी रोटियाँ खानी थी क्लाउड किचन से उसने बेली हुई रोटियाँ मंगाई (क्योंकि उसे रोटी बेलना नहीं आता था) और सेंक कर दे दी। (आप हमेशा ऐसा ना करें रोटी बनाना सीख लें)

अब आप ऐसा क्या अनोखा करें कि ग्राहक आप से भोजन लेने को विवश हो जाएं? आपके ज्यादातर ग्राहक युवा और हेल्थ कांशस लोग होंगे, पार्टीफूड की बात अलग है। आप किसी डायटीशियन से जुड़कर कैलोरी चार्ट और मेन्यू बनाकर हेल्थ कांशस लोगों के लिये अपने मेन्यू में जोड़ सकती हैं। आप की मार्केटिंग में आप प्राइवेट हॉस्पिटल को इसमें जोड़ सकते हैं डॉक्टर की सलाह पर विशेष पेशेंट के लिये मील बॉकस तैयार कर दिये जा सकते हैं बस हाइजीन का खास ख़्याल रखना होगा डॉक्टर से पेशेंट की फूड एलर्जिक राय भी लेनी होगी थोड़ा रिस्की हो सकता है, आजकल जिम में भी हेल्दी फूड प्रोवाइड करने का प्रावधान है आप वहाँ से डायटिशन की सलाह से हेल्दी फूड, सलाद, ड्रिंक्स की सर्विस दे सकते हैं। कुल मिलाकर कुकिंग में रूचि रखने वालों के लिये ये खुला आसमान है यहाँ आप जैसी चाहें उड़ान भर सकते हैं।

एक स्त्री पैकेज योजना है जिसमें 25 लाख तक का लोन केंद्र सरकार और भारतीय स्टेट बैंक के साथ मिलकर चलाई गई है इसमें 18 वर्ष से 65 वर्ष की आयु चाहिये ब्यूटी पार्लर चलाने वाली, सीए, आर्किटेक्ट स्व व्यवसायी महिलायें आवेदन कर सकती हैं। जो लोन ले रही हो उस महिला का व्यवसाय में 50 प्रतिशत स्वामित्व होना चाहिये। इसके अलावा राज्य सरकार द्वारा आयोजित उद्यमिता विकास कार्यक्रमों (ईडीपी) में हिस्सा लें। जौमेटो द्वारा हाइपर प्योर सर्विस है जो फूड रॉ मटैरियल प्रोवाइड करते हैं।

क्लाउड किचन आधुनिक समय का ऐसा व्यवसाय है जिसने तकनीक और भोजन सेवा को एक साथ जोड़ दिया है कम लागत और बढ़ती ऑनलाइन मांग के कारण यह युवाओं औरनए उद्यमियों के लिये आकर्षक विकल्प बनता जा रहा है। देश की भलाई भी इसमें छुपी है मसलन आर्थिक रूप से कमज़ोर लोगों को, रोटी बनाने, पैकिंग करने, डिलीवरी पहुंचाने (गरीब स्टूटेंड्स को) काम मिल जाता है। चलिये एक नये तरीके से खुद की उन्नति देखें और सबको अच्छा भोजन करा के पूछते रहें और क्या कह रही है ज़िंदगी?

मजबूत होना यानी अहिंसक ...!

दृष्टिकोण

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

अकीरा कुरोसावा ने पहली फिल्म 'सांशीरो सुगाता' (1943) बनाई, लेकिन रोक लग गई। कुछ बरस बाद फिल्म रिलीज तो हुई, लेकिन इतने सारे कट्स के साथ कि करीब बीस मिनट छोटी हो गई। इसके बारे में टीम को न तो कोई खबर दी गई, न ही इजाजत ली गई। खैर, इतने बरसों बाद तोहो स्टूडियो ने इस फिल्म को पेश किया है। कान फिल्म फेस्टिवल में इसे क्लासिक्स सेक्शन में दिखाया और पूरा हॉल भरा था।

एक जवान लड़का बदला लेने के लिए जूडो में मास्टर बनना चाहता है। इसी दौरान उसे इसका असली मतलब पता चलता है। पारंपरिक जापान में जिंदगी के मतलब, खुद पर काबू और सम्मान की तलाश दिखाती है। यह अहसास बना रहता है कि कुरोसावा की पहली फिल्म है। कहानी जूजित्सु पर जूडो की जीत के बारे में है, जो समुराई का खेल है। यह दिखाता है कि कानो क्या बनाना चाहते थे, सिर्फ लड़ाई का खेल नहीं, बल्कि मन का स्कूल भी। जूडो उन लोगों को शांत करता है जो बेसब्र होते हैं और शर्मिले को खोल से बाहर निकालता है। यही मैसेज है और कहा है कि जब मजबूत होते हैं तो इसे दिखाने की जरूरत नहीं होती - मजबूत होने का मतलब अहिंसक होना भी है।

वाग्देवी के बिना भोजशाला अब भी सूनी है

सामयिक

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला
लेखक साहित्यकार हैं।

अंततः भोजशाला के साथ न्याय हुआ। यदि ऐसा नहीं होता, तो न्याय व्यवस्था पर से भरोसा पूरी तरह उठ जाता। जो कभी एक बार भी भोजशाला गया है, वह भोजशाला के पत्थरों को गवाह के रूप में खड़ा हुआ देखकर आया है। जो इतिहास में न जाना चाहे, उसके सामने भी भोजशाला ने हमेशा अपना हृदय खोलकर रखा है। यूँ तो भोजशाला का इतिहास मामूली नहीं है। उसे बार-बार दबाया जाता रहा, लेकिन उसका स्वाभिमान हिन्दू सम्राट् भोजदेव की तरह हमेशा जागा हुआ दिखाई दिया। यद्यपि आज कोई भी इतिहासकार भोजशाला की पूरी कहानी नहीं समझा सकता, लेकिन सच तो सामने आ गया है।

राजा भोज से भी पहले दसवीं सदी में धारा नगरी राजा मुंज के प्रताप के कारण अखंड भारत में दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो चुकी थी। तब भोजशाला का नाम भले ही कुछ और रहा हो, लेकिन वह मुंज के समय में बनकर तैयार हो चुकी थी। उस दौर में भोजशाला का नाम समूचे मालव प्रदेश के सबसे बड़े विश्वविद्यालय के रूप में विख्यात हो रहा था। नालंदा और तक्षशिला के बाद सबसे बड़े विश्वविद्यालयों में पहला नाम भोजशाला का ही आता था। दूर-दूर से विद्वान् भोजशाला का वैभव देखने आते थे। राजा मुंज ने इस विश्वविद्यालय की नींव रखने के साथ ही वह आंतरिक संरचना बनाई, जो लम्बे समय तक बनी रही। मुंज सरस्वती का महान् उपासक था। जब वह नहीं रहा, तब पूरे भारत के विद्वानों के मुँह से यही एक वाक्य निकलता था-'गते मुंजे यशःपुंजे निरालम्बा सरस्वती'(यशस्वी मुंज के जाने बाद सरस्वती निरालम्ब हो गई।)

मुंज के बाद राजा भोज ने इस विश्वविद्यालय के ऐश्वर्य में चार चाँद लगा दिये। वह महान् पराक्रमी सम्राट् होने के साथ-साथ सच्चा सरस्वती पुत्र था। अपने समय में वह राजा से भी अधिक भोजशाला का कुलपति था। राजा भोज का चरित्र इतना ऊँचा था, कि पूरी प्रजा उसका अनुसरण करने में स्वयं को धन्य मानती थी। भोज की विद्वत्ता के कारण ही इस विश्वविद्यालय का नाम भोजशाला हुआ। भोजशाला में चौदह सौ पंडित थे, जो अलग-अलग विषयों के विद्वान् थे। तब भोजशाला चार मंजिला विशाल और भव्य इमारत थी, जिसमें अनवरत वेदपाठ गूँजते रहते। भोजशाला में दार्शनिक थे, वैज्ञानिक थे, शिल्पकार थे, धर्मशास्त्री थे, वेदों के महान् आचार्य थे।

राजा भोज के समय भोजशाला कई महत्वपूर्ण गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था। धनंजय ने यहीं बैठकर दशरूपक लिखा, जो भरत मुनि के बाद नाट्यशास्त्र का सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ है। भोजशाला की ख्याति सुनकर दूर-दूर से विद्वान् यहाँ आते रहे। उव्वट काश्मीर से पैदल चलकर यहाँ आया, और यहीं उसने सबसे पहला वेद-भाष्य लिखा। कहा जाता है कि तब धारा नगरी विक्रमादित्य की नगरी उज्जयिनी से बहुत आगे निकल चुकी थी। इसे अखंड भारत की काशी कहा जाने लगा था। भोजशाला में शास्त्र-चर्चाएँ होतीं, एक साथ कई वीणाएँ झनझनातीं। इसके विशाल प्रांगण में आकाशचारी विमान का प्रदर्शन होता और 'समरांगण सूत्रधार' की विवेचना होती। भोजशाला के परिसर के बीचों-बीच वह विशाल यज्ञशाला अब भी है, जहाँ राजा भोज सहस्त्रों ब्राह्मणों के साथ बैठकर देवों का आह्वान करते थे।

भोजशाला के भीतर की सारस्वत सम्पदा अंत में किसके पास गई, यह कोई नहीं बता सकता। भोजशाला के पत्थरों पर जो उत्कीर्ण है, वह हमारे लिये बेशकीमती है। ये बोलते पत्थर हैं। भोजरचित विपुल साहित्य हमारे पास आज भी सुरक्षित है। एक ज्ञानवापी भोजशाला में भी है, जिसे धारा नगरी के बच्चे-बूढ़े अब भी 'अकल कुई' के नाम से जानते हैं। इसका अमृत जल पीकर कई लोग तर गये। भोजशाला को एक सामान्य हिन्दू मन्दिर की तरह न देख कर विराट गुरुकुल की तरह देखेंगे, तो इसके कई रहस्य उजागर होंगे।

यहाँ कभी वाग्देवी की बहुत सुंदर प्रतिमा स्थापित थी। वह वाग्देवी ही इस विश्वविद्यालय की कुलस्वामिनी कहलाती थी। सच तो यह है, कि तब यह भोजशाला नहीं, वाग्देवी सरस्वती का ऐसा भव्य मंदिर था, जैसा इस धरती पर और कहीं भी नहीं था। महमूद गजनवी ने सोमनाथ मंदिर को लूटने के बाद भोजशाला को ही लूटने का मन बनाया था, लेकिन मुंज और भोज के प्रतापी सैनिकों ने उसके धार में घुसने के सब रास्ते रोक दिये, और वह मालवा को छोड़कर कच्छ-सिन्ध होकर भाग गया। राजा भोज ने भोजशाला का यश इतना बढ़ा दिया था, कि एक समय यह भोजशाला ही भोज की राजधानी भी बन गई थी। राजा सदाचारी और विद्वान् था, तो प्रजा भी सदाचारी और विद्वान् थी।पाश्चात्य विद्वान् तो आज भी भोज को भारतीय आगस्टस कहते हैं।

राजा भोज के बाद जयसिंह उदयादित्य, लक्ष्मणदेव, नरवर्मदेव, यशोवर्मदेव, अर्जुनवर्मदेव और देवपाल देव ने भोजशाला की सुरक्षा में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। भोजशाला के प्रांगण में आज भी व्याकरण की शिक्षा से जुड़े हुए जो दो सर्पबंध पत्थर पर खुदे हुए हैं, वे भोज के इन परवर्ती राजाओं की रुचि और कौशल के प्रतीक हैं। 'पारिजातमंजरी' यहाँ भित्ति पर उत्कीर्ण है। तेरहवीं सदी में भोजशाला का नाम काशी और अवंतिका के विद्वानों में पूजा भाव से लिया जाता था। उस लकड़हारे की चर्चा होती थी, जिसने संस्कृत भाषा के एक अशुद्ध प्रयोग पर राजा भोज को टोक दिया था, वही लकड़हारा बाद में भोजशाला का द्वारपंडित नियुक्त हुआ। चौदहवीं सदी की शुरुआत में अलाउद्दीन खिलजी भोजशाला को लूटने और तहस-नहस करने के इरादे से आया। राजा मैकलदेव और उसकी सेना ने अलाउद्दीन खिलजी को रोकने की पुरजोर कोशिश की, किन्तु सफल नहीं हुए। अलाउद्दीन की सेना भीतर तक घुस आई। भोजशाला के प्रांगण में रखी हुई देव-प्रतिमाएँ और प्रस्तर-शिल्प खंड-खंड कर दिये गये। उस समय भोजशाला में बारह सौ विद्वान्-पंडित स्वाध्याय में थे। वे वेदाभ्यास कर रहे थे। प्रांगण में ही खुला कत्लेआम हुआ। भोजशाला चीत्कार उठी, किन्तु उस चीख़ को सुनने वाला तब कोई नहीं था। अलाउद्दीन तो अपने गुलाम को यहाँ तख्त पर बैठा कर चला गया। उसके जाने के बाद दिलावर गौरी खान, हुशंगशाह, गजनी खाँ, महमूद खाँ ने बारी-बारी से भोजशाला को नोंचा। इन्होंने आधी सदी तक इतने आघात दिये कि आईना सामने हो, तो आज भोजशाला स्वयं को पहचान नहीं सकती। वर्ष 1457 में महमूद खान ने भोजशाला परिसर में भारी उत्पात मचाया। वेद और धर्म शास्त्र की महत्वपूर्ण पांडुलिपियाँ जला डालीं, महत्वपूर्ण ऐतिहासिक शिलालेखों के टुकड़े-टुकड़े कर उन्हें दफ्न कर दिया। पत्थरों पर उकेरे हुए पवित्र स्तोत्रों को नीचे पटक कर उनकी मर्यादा को तार-तार कर दिया।

राजा भोज की देहत्याग के बाद एक-दो नहीं चार सदियों तक भोजशाला ने तूफान झेला है। आखिरी की दो सदियों में तो यहाँ सनातन धर्म को मानने वालों का प्रवेश भी वर्जित था। वर्ष 1724 में एक बार फिर परमारों के हाथ में बागडोर आई, तो कुछ आस बंधी। उदाजीराव पवाँर ने अपना युद्ध कौशल तो खूब दिखाया, लेकिन भोजशाला की सुध नहीं ली। न उन्होंने, न उनके बाद के परमारों ने। भोजशाला पूरी तरह खंडहर में तब्दील हो गई। इसके अहाते में गाय-ढोर बंधने लगे। चारा और गोबर के ढेर लगने लगे। एक वक्त तो ऐसा भी आया, जब भोजशाला धारा नगरी की सबसे गंदी और प्रदूषित जगह थी। इससे अच्छे तो मुंज के बनवाये गये बारह तालाब थे। ब्रिटिश शासन ने भोजशाला के अतीत में झाँकने का प्रयास किया। उसके पास पारखी नजर तो थी। उसने भोजशाला की अस्मिता को बहुत जल्दी पहचान लिया था, लेकिन भोजशाला इतनी क्षत-विक्षत हो चुकी थी, कि उसे वापस उसी दशा में लौटा पाना किसी के लिये सम्भव नहीं था। ब्रिटिश सरकार ही मेरे यहाँ से वाग्देवी की प्राणप्रतिष्ठित और पूजित प्रतिमा को उठाकर लंदन ले गये, जहाँ वह आज केवल शोभा की वस्तु है और अपने घर लौटने को कसमसा रही है। इधर भोजशाला को सहेजने के छुटपुट प्रयास राज्य स्तर पर हुए, जो नाकाफी थे।

एक दौर वह भी आया, जब इस्लाम धर्म को मानने वालों ने भोजशाला को नमाज पढ़ने के लिये उपयुक्त जगह समझा। वे आने लगे, बार-बार आने लगे, और फिर आते चले गये। धीरे-धीरे उन्हें लगने लगा कि भोजशाला की जगह उन्हींकी है, उन्हींके लिये खुदा ने बख्शी है। अब वे इस जगह के लिये दावा भी करने लगे। उन्होंने कमाल मौलाना की दरगाह तक बता दिया। भोजशाला को सब ओर से इस तरह ढँक दिया गया, कि वह बाहर से आने वालों को एक बड़ी और मजबूत मस्जिद ही दिखाई दे। यह सब दिखावा इन बीते सौ सालों के भीतर का है। भोजशाला को पहले मुस्लिम हुक्मरानों ने सताया, फिर मजहबपरस्तों के निशाने पर आ गई। आजाद भारत में सरकारें आईं, गईं। सब आँख मूँद कर तमाशा देखती हुई अपनी कुर्सी बचाने में लगी रहीं।

भोजशाला की शान लौटाने के लिये धार-निवासियों ने कड़ा संघर्ष किया है। धारा नगरी के लोग आज भी स्वयं को राजा भोज की प्रजा मानते हैं। उन्होंने भोजशाला के लिये न्यायमंदिर के द्वार खटखटाये। बार-बार खटखटाये। सनातन धर्म की जयजयकार करने वाले भी उनके साथ खड़े हुए। भोजशाला से जुड़ी हुई कोई भी बात किसी से छुपी हुई नहीं थी। एक के बाद एक साक्ष्य जुटते चले गये, अबकी बार इतिहास सामने था। न्यायमंदिर में आस्था और विश्वास की फिर जीत हुई। अब इंतजार है उस वाग्देवी का, जो लंदन म्युजियम में है। वाग्देवी को आना ही होगा। उसके बिना भोजशाला अब भी सूनी है। भोजशाला केवल मंदिर नहीं, भारत के आधुनिकतम गुरुकुल के स्वरूप में भी विकसित हो। यही हमारी इच्छा और संकल्प होना चाहिए।